ओ३म्

प्रकाश गीत-संगीत

आर्य समाजों के उत्सवों, साप्ताहिक सत्संग एवं
विद्यालयों में गाने योग्य भजन,
देशभक्ति गीत, यज्ञगीत, महर्षि महिमा
एवं
विविध विषयों के गीतों का स्वरलिपि सहित,
अनुपम संग्रह अधिकांश गीत बहुत सरल
एवं
कुछ गीत शास्त्रीय पुट लिए हुए हैं। जिन्हें सहजता
से बजाकर गाया जा सकता है।

गीतकार
स्व. पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न अजमेर

संगीतकार
स्नहेलता शर्मा
पुत्री
(स्व. पं. प्रकाशचंद्र जी कविरत्न)

प्रकाशिका

स्नेहलता शर्मा

पुत्र

राजीव शर्मा

स्थाई पता

C/o श्री राजीव शर्मा

322, गुरू जम्बेश्वर नगर A

चौ. चरण सिंह मार्ग, क्वीन्स रोड

जयपुर (राजस्थान)

फोन : (0141)2354296 (नि.)

वर्तमान पता :

स्नेहलता शर्मा

C/o श्री प्रमोद आर्य, कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, भोजूबीर, वाराणसी

फोन : (0542) 2383023(निवास)

(0542) 2584217

प्रथम संस्करण : 2003 ई.

विक्रम संवत : 2060

मूल्य : 80/- रु.

मुद्रक

स्क्रीन विज़न

एस. 15/2-ख-2, घौसाबाद

वाराणसी-221 002

फोन : (0542) 2500483

लेखिका की ओर से

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध कवि एवं गायक स्व. पं. प्रकाश चन्द्र जी 'कविरत्न' अजमेर की पुत्री होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है अतः ईश्वर को अनेकानेक धन्यवाद! पूज्य पिताजी ने जगतगुरु महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी आत्मा एवं हृदय से उत्पन्न उदगार, अपनी कविताओं के द्वारा जन-जन तक पहुँचाए। उदाहरणार्थ :-

जैसे कवि अपने मधुर छन्द पै निछावर है,
जैसे प्रेमी चकोर चन्द पै निछावर है।
भृंग अरविन्द के मकरन्द पै निछावर है,
तैसे दिल मेरा दयानन्द पै निछावर है।।

मेरा हृदय भी इसी भाँति उनकी इन मार्मिक हृदयस्पर्शी एवं भक्तिपूर्ण कविताओं पर निछावर है। उन्होंने 28 वर्षों की गठिया की बीमारी में, हृदय से निकले इन उदगारों को, कविताओं के रुप में,अनेक पुस्तकों के द्वारा, एक एक पुष्प की भाँति पिरोकर एक सुरभित माला बनाकर अपने पूज्य गुरु 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' के चरणों में अर्पित की है । मै भी परमपिता परमात्मा की कृपा एवं स्व. पूज्य पिताजी-माताजी (पुष्पाजी) एवं माँ सदृश बुआ जी (हरदेवी ज़ी) से प्रेरित होकर उनके गीतों को स्वरचित धुनों में ढालकर स्वरलिपि सहित यह पुस्तक "प्रकाश गीत संगीत" उनके चरणों में श्रद्धाञ्जलि स्वरुप अर्पित कर रही हूँ । मैं 50 वर्षो तक देश की विभिन्न आर्यसमाजों में एवं आकाशवाणी जयपुर से गाती रही, लेकिन इस पुस्तक को आप सभी के समक्ष लाने में जो आत्मिक संतुष्टि मुझे प्राप्त हुई है, उस अनुभूति को शब्दों में व्यक्त करना असंभव है।

पूज्य पिता जी ने एक गीत लिखा है-

रहेंगे ना हम ना ये सुख साज सारे मगर सृष्टि का चक्र चलता रहेगा ।
उदय पूर्व में प्रातः जो सूर्य होगा, वही साँझ पश्चिम में ढलता रहेगा ।।

इन गीतों को मेरे संगीत प्रेमी साथी कलाकार इस स्वरलिपि के द्वारा सहजता से जनता के समक्ष गाकर उनमें जोश एवं भक्ति भावना भरते रहेंगे। इस प्रकार यह गीत माला दीर्घ समय तक सुगन्धित रहेगी।

मुझे विश्वास है कि मेरा यह प्रयास सार्थक करने में आप सभी की शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद प्राप्त होगा। यह गीत-संगीत जनमानस में शुभकामनाएँ एवं जागृति का संचार करते रहें, इसी उद्देश्य को लेकर मैं यह पुस्तक प्रकाशित करवा रही हूँ।

माननीय स्वामी दीक्षानन्द जी की सेवामें इसी संदर्भ में मैंने पत्र लिखा था। उनका आशीर्वाद सदैव मुझे प्राप्त होता रहा। दुर्भाग्यवश उनका देहावसान हो गया। उनके स्थान पर माननीय कैप्टन देवरत्न जी आर्य प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का पत्र मुझे प्राप्त हुआ। माननीय स्वामी सेवानन्द जी अजमेर जिनके सान्निध्य में मेरा बचपन व्यतीत हुआ, सदैव बेटी तुल्य माना मुझे, इसी कारण आशीर्वाद स्वरुप उन्होंने 2000/– की राशि देकर मेरा उत्साह बढ़ाया है। उनके पुत्र मेरे भ्राता तुल्य श्री ओम प्रकाश वर्मा, उंपप्रधान आर्य समाज किशनपोल जयपुर एवं उनकी पत्नि श्रीमती सरोज वर्मा, जो मेरी शिष्या एवं निकटतम सखि हैं, उन्होंने मुझे इस कार्य के लिए प्रेरित किया। मेरी अत्यन्त प्रिय सहोदरा शुभचिन्तिका श्रीमती विमला बगड़िया कलकत्ता ने इस शुभ कार्य हेतु 5000/– की राशि बहुत श्रद्धा एवं स्नेह के साथ भेंट की है।

माननीय कैप्टन देवरत्न जी आर्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान एवं प्रौ0 राससिंह जी रावत, संसद सदस्य (लोकसभा) नई दिल्ली ने मेरे इस प्रयास के लिए अपनी अमूल्य सम्मति, सुझाव एवं इस प्रकार की पुस्तक प्रकाशित करवाने में मेरा जो मनोबल बढ़ाया एवं भविष्य में कुछ कार्य करने की प्रेरणा दी इसके लिए मैं इन समस्त प्रतिष्ठित विद्वान महानुभावों की अत्यन्त आभारी हूँ एवं नम्रता पूर्वक अनेकानेक धन्यवाद देती हूँ।

वर्षों से आर्य जनता ने मुझे गाते हुए देखा सुना है, सराहा है एवं उत्साहित किया है। अब मेरी इन स्वरचित धुनों को अन्य गायकों द्वारा सुनेगें एवं उनका उत्साह बढ़ाते रहेंगे, यही मेरी कामना है।

नोट : यदि साथी गायकों को यह पुस्तक पसन्द आए एवं लाभकारी अनुभव हो, वे अवश्य मुझे मेरे स्थाई पते पर पत्र लिखें। जिससे कि मैं उत्साहपूर्वक एक और पुस्तक, इन गीतों के अतिरिक्त, अन्य गीतों की धुनें बनाकर प्रकाशित करवाऊँ।

निवेदिका

स्नेहलता शर्मा

विशेष सूचना : इन धुनों पर कैसेट एवं स्वरलिपि का प्रकाशन नहीं करवायें क्योंकि यह कार्य मैं स्वयं शीघ्र ही सम्पन्न करने जा रही हूँ।

स्थापित : १९०८, रजिस्टर्ड : १९१४
दूरभाष : ३२७४७७१, ३२६०९८५
फैक्स : ३२४८८६, ३२७०५०७
E-mail : vedicgod@nda.vsnl.net.in
: saps@tatanova.com
तार : सार्वदेशिक (Sarvadeshik)

ओ३म

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

SARVADESHIK ARYA PRATINIDHI SABHA

(International Arya League)

3/5, Dayanand Bhawan, Ramlila Ground,
New Delhi-110002

आपके दो पत्र पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी के नाम से लिखे हुए प्राप्त हुए। स्वामी जी अब हमारे बीच नहीं रहे।

स्वामी जी अपने स्वभाव के अनुकूल सदा ही अच्छे गायकों का सम्मान करते रहे हैं।

यह जान कर भी प्रसन्नता हुई कि आप आदरणीय पं. प्रकाशचन्द्र जी 'कविरत्न' के गानों पर नई धुनें बना रही हैं मेरे विचार में आर्य समाज में जो गाने गाये जाएँ वह फिल्मी धुनों पर नही होने चाहिये।

आप इन नई धुनो का कैसट बनाने की कृपा करें ताकि उसका सभी आर्य समाजों में उपयोग किया जा सके।

देव रत्न आर्य
देवरत्न आर्य

सभा प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

प्रो0 रासासिंह रावत
संसद सदस्य
(लोक सभा)

1, हरीश चन्द्र माथुर लेन,
नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष : 3314700

313, चाँद बावड़ी,
अजमेर-305 001 (राज0)
दूरभाष : 460200, 445400

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आपने आर्य जगत के गौरव, संगीत स्वरों के महान जानकार स्व. पं. प्रकाश चन्द्र जी कविरत्न द्वारा विभिन्न विषयों पर रचित महत्वपूर्ण गीतों का संकलन कर उन्हें स्वरचित धुनों में गा कर स्वर लिपिबद्ध करके पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इसके लिये आप बधाई एवं साधुवाद की पात्र हैं। निश्चय ही इस प्रकाशन से आर्य जगत के भजनोपदेशक, भजनीक तथा संगीत शिक्षक जो संगीत का थोड़ा बहुत भी ज्ञान रखते हैं वे आप द्वारा स्वरचित धुनों का उपयोग कर सम्मेलनों, समारोहों तथा विद्यालयों में गा सकेगें जिससे आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के कार्य को और अधिक बढ़ावा तथा प्रोत्साहन मिलेगा।

गायक फिल्मी गीतों की धुन पर आर्य समाज के गीत बनाते और गाते हैं जिनका उचित प्रभाव नहीं पड़ता। जबकि पं. प्रकाश जी की रचनाओं में संगीतात्मक, गेयता एवं मधुरता के सहज दर्शन होते हैं तथा उनमें ऋषि दयानन्द एवं आर्य समाज के गूढ़ सिद्धान्तों का प्रतिबिम्ब भी छलकता है। आर्य जगत के गौरव पं. प्रकाशचन्द्र जी की अमूल्य रचनाओं को स्वरलिपिबद्ध कर जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास पंडित जी को एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आप द्वारा प्रकाश जी के गीतों को संगीत स्वर प्रदान करना "चार चाँद" लगाने जैसा कार्य होगा।

आज पंडित जी का भौतिक शरीर भले ही न हो परन्तु उनकी कीर्ति सदैव गुंजायमान रहेगी। आपकी मधुर वाणी में भी अत्यधिक रस और माधुर्य भरा रहता था। संभवतः अब भी पूज्य पं. प्रकाश जी की रचनाओं को गाते हुए ऐसा ही वातावरण रहता होगा।

आपने इस अनूठी भजन पुस्तिका के प्रकाशन हेतु मेरी सम्मति मांगी है उसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ। निश्चय ही इस कार्य के लिये मुझे गौरव का अनुभव हो रहा है।

मेरी तरफ से इस अनुपम कार्य के लिए पुनः बधाई स्वीकार करें। मै आपके प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ।

भवदीय

(रासासिंह रावत)

गीतों की सूची

अन्य विषय पर गीत

यज्ञ-महिमा

ओऽम् ध्वज गान

****

"हे प्रभु परमपिता"

हे प्रभो! परम पिता तुम गुणों की खान हो ।
तुम अनादि तुम अनन्त पूर्ण तुम महान हो ।।

चन्द्र सूर्य से विशाल लोक तुम मे हैं बसे ।
प्राणियों के प्राण तुम सर्वशक्तिमान हो ।।

कौन! ऐसा कर्म है जो छिपाया जा सके ।
सब जगह सदैव जब आप विद्यमान हो ।।

नित्य भोजनादि से प्राणियों को पालते ।
तुम विधाता दाता तुम, तुम दयानिधान हो ।।

ढूंढना तुम्हे 'प्रकाश' क्यों गया प्रयाग में ।
वो हृदय में पायेगा, जिसको सच्चा ज्ञान हो ।।

*****

ताल – रुपक

–: स्थाई :–

सा	म	नी	ध	प	म	रे	नी	रे	रे	रे	–	–	–
हे	ऽ	प्र	भु	ऽ	ऽ	प	र	म	पि	ता	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	
नी	रे	म	ग	रे	सारे	नीसा	ध	नी	रे	सा	–	–	–
तु	म	गु	णों	ऽ	कीऽ	ऽऽ	खा	ऽ	न	हो	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	
म	ध	रें	सां	–	सां	–	ग	प	सां	नी	–	–	नी
तु	म	अ	ना	ऽ	दि	ऽ	तु	म	अ	नँ	ऽ	ऽ	त
×			2		3		×			2		3	

सां	ध	ध	म	रे	रे	रे	नी	रे	रे	सा	–	–	–
पू	ऽ	र्ण	तु	म	ऽ	म	हा	ऽ	न	हो	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	

–:अन्तरा :–

ध	ध	ध	ध	म	रे	रेंरे	नी	नी	ध	नी	–	–	नी
चँ	ऽ	द्र	सू	ऽ	र्य	ऽऽ	से	ऽ	वि	शा	ऽ	ऽ	ल
×			2		3		×			2		3	
नी	रें	मं	गंमं	रेंगं	सांरें	नीसां	ध	नी	रें	सां	–	–	–
लो	ऽ	क	तुम	ऽऽ	मेंऽ	ऽऽ	हैं	ऽ	ब	से	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	

सरगम :–

धसां	ध,म	धम	रेम	रे,नी	रेसा,	साग	मध	नीसां	धनी	सां,	धनी	सां,	धनी
×			2		3		×			2		3	

"चन्द्र सूर्य" यह पंक्ति दोबारा गाएं–

रें	–	रें	रें	–	नी	–	सां	–	नी	सां	–	ध	ध
प्रा	ऽ	णी	यों	ऽ	के	ऽ	प्रा	ऽ	ण	हो	ऽ	तु	म
×			2		3		×			2		3	
सां	–	ध	म	म	रे	–	नी	रे	रे	सा	–	–	–
स	ऽ	र्व	श	ऽ	क्ति	ऽ	मा	ऽ	न	हो	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	

"हे प्रभू" प्रथम पंक्ति गाएं –

"काहे होत उदास मना तू"

काहे होत उदास मना, जब भगवन तेरे साथ रे ।।

जानत हैं जो सब के मन की, पीर हरत हैं जो निज जन की ।
ऐसे दयानिधान के रहते, तू कब, दीन, अनाथ रे ।।

पार करेगा वही नाव रे, तू क्या जाने अरे, बावरे ।
तेरे हैं दो हाथ किन्तु उसके हज़ार हैं हाथ रे ।।

देर भले अन्धेर नहीं है, करता सच्चा न्याय यहीं है ।
वही सुनेगा एक दिवस सब, तेरी करुणा-गाथ रे ।।

उसकी पावन ज्योति निरख रे, प्रीति पुनीत उसी से रख रे ।
आस उसी की कर 'प्रकाश', मत झुका किसी को माथ रे ।।

*****

ताल - कहरवा

-: स्थाई :-

															सा
															म
												×			
सा	रे	सा	नी़	सा	–	ग	–	रे	–	सा	सा	सा	–	सा,	सा
ना.	ऽ	तू	ऽ	का	ऽ	हे	ऽ	हो	ऽ	त	उ	दा	ऽ	स,	म
2				×				2				×			
सा	रे	सा	नी़	सा	–	ग	–	रे	–	सा	सा	सा	–	सा	सा
ना	ऽ	तू	ऽ	का	ऽ	हे	ऽ	हो	ऽ	त	उ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
2				×				2				×			
–	–	सा	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नी	सां	सा	नी
ऽ	ऽ	स	ऽ	भ	ग	व	न	ज	ब	ते	रे	सा	ऽ	ऽ	थ
2				×				2				×			

ध	प	प	–	प	नी,	नी	ध	ध	प,	प	म	म	–	म,	सा
रे	ऽ	तू	ऽ	का	ऽ,	हे	ऽ	हो	ऽ,	त	उ	दा	ऽ	स,	म
2				×				2				×			

-: अन्तरा :-

सा	रे	सा	नी	–	–	ग	–	–	प	–	ध	सां	सां	सां	सां
ना	ऽ	तू	ऽ	ऽ	ऽ,	जा	ऽ	ऽ	न	ऽ	त	हैं	ऽ	ऽ	ऽ
2				×				2				×			
सां	सां	सां	सां	सां	सां	नी	नी	–	सां	–	रें	नी	सां	सां	नी
जो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ब	ऽ	के	ऽ	ऽ	म	ऽ	न	ऽ
2				×				2				×			
ध	–	प	–	–	–,	ग	–								
की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	पी	ऽ	अगली पंक्ति इसी प्रकार से गानी है –							
2				×				2				×			

ध – प – नीचे लिखी सरगम गाना है

की	ऽ	ऽ	ऽ	सा	ग	प	नी	ध	–	–	–	ध	नी	सां	नी
ध	प	ग	–	सा	गं	सां	–	नी	सां	नी	–	ध	नी	ध	–
प	ध	प	–	ग	प	ग,	–	सा	ग	सा	–	सा	ग	प	ध
नी	ध	सां	–	–	–	जा,	ऽ	ऽ	न	ऽ	त	है	ऽ	ऽ	ऽ
2				×				2				×			

पूरी पक्ति गाएं

ध	–	प	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नी	सां	सां	नी
की	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	ऽ	से	ऽ	द	या	ऽ	नि	धा	ऽ	न	के
2				×				2				×			
ध	प	प	–	प	नी	नी	ध	ध	प	प	म	म	–	म	सा
र	ह	ते	ऽ	तू	ऽ	क	ब	दी	ऽ	न	अ	ना	ऽ	थ,	म
2				×				2				×			

"तुम को बिसार किसको"

तुम को बिसार किसकी? आराधना करूँ मैं।
पा कल्पतरु किसी से क्यों? याचना करु मैं ।।

मोती मुझे मिला जब मानस के मानसर में ।
कंकर बटोरने की क्यों? कामना करु मैं ।।

सबके परमपिता जब घट-2 में रम रहे हैं ।
लघु जान क्यों? किसी की अवहेलना करुं मैं ।।

मुझको "प्रकाश" प्रतिपल आनन्द आन्तरिक है ।
जग के क्षणिक सुखों की क्यों कामना करुँ मैं ।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

														सा	रे
														तु	म
								×				2			
ग	ग	ग	ग	प	प	–	म	रे	म	ग	–	–	–	प	प
को	ऽ	ऽ	ऽ	बि	सा	ऽ	र	कि	स	की	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ
×				2				×				2			
सां	–	सां	–,	नी	सां	प	म	रे	म	ग	–	–	–,	प	प
रा	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ना	ऽ	क	रुँ	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ,	पा	ऽ
×				2				×				2			
गं	गं	गं	गं	गं	गं	मं	सां	रें	रें	रें	–	–	–	रें	नो
क	ऽ	ऽ	ऽल	प	त	रु	कि	सी	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

नी	नी	नी	–	सां	गं	रें	सां	सां	–	सां	–	–	–,	गं	रें
क्यों	ऽ	या	ऽ	च	ना	ऽ	क	रुँ	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ
×				2				×				2			
मं	–	गं	सां	नी	ध	नी	ध	प	–	प	–	प	प,	सा	रे
ऽ	ऽ	रा	ऽ	ध	ना	ऽ	क	रूँ	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ,	तु	म
×				2				×				2			

-: अन्तरा :-

														प	प
														मो	ऽ
								×				2			
ध	–	–	–	प	ध	–	म	ध	ध	ध	ध	–	–	ध	रें
ती	ऽ	ऽ	ऽ	मु	झे	ऽ	मि	ला	ऽ	ज	ब	ऽ	ऽ	मा	ऽ
×				2				×				2			
रें	सां	सां	–	–	प	म	म	ध	प	प	–	–	–,	प	प
न	स	के	ऽ	ऽ	मा	ऽ	न	स	र	में	ऽ	ऽ	ऽ,	कं	ऽ
×				2				×				2			
गं	गं	गं	गं	गं	मं	–	सां	रें	–	रें	–	नीरें	धनी	प	प
क	र	ऽ	ऽ	ब	टो	ऽ	र	ने	ऽ	की	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	कं	ऽ
×				2				×				2			
प	मं	गं	गं	गं	गं	मं	सां	रें	–	रें	–	–	–	–	नी
क	र	ऽ	ऽ	ब	टो	ऽ	र	ने	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
नी	नी	नी	नी	सां	गं	रें	सां	सां	–	–	–	सां	–,	गं	रें
क्यों	ऽ	का	ऽ	म	ना	ऽ	क	रुँ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ,	आ	ऽ
×				2				×				2			
मं	–	गं	सां	नी	ध	नी	ध	प	प	प	मं	प	ग,	सा	रे
ऽ	ऽ	रा	ऽ	ध	ना	ऽ	क	रुँ	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ,	तु	म
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी भाँति गाने है –

"तुम्हारे दिव्य दर्शन की"

तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा लेके आई हूँ ।
पिलादो प्रेम का अमृत पिपासा लेके आई हूँ ।।

रतन अनमोल लाते लाने वाले, भेंट को तेरी ।
मैं केवल अश्रुओं की मंजु माला लेके आई हूँ ।।

जगत के रंग सब झूठे तू अपने रंग में रंग ले ।
मैं अपना यह महाबदरंग बाना लेके आई हूँ ।।

"प्रकाशानन्द" हो जाए मेरी अन्धेरी कुटिया में ।
तुम्हारा आसरा विश्वास आशा लेके आई हूँ ।।

*****

ताल - कहरवा

-: स्थाई :-

											ग	ग	ग	म	म
											तु	म्हा	ऽ	रे	ऽ
								×				2			
प	प	प	प	प	सां	ध	म	म	–	–	नी	नी	–	नी	रेसां
दि	ऽ	ऽ	व्य	द	र	श	न	की	ऽ	ऽ	मैं	इ	ऽ	च्छा	ऽऽ
×				2				×				2			
सां	नीसां	ध	ध	प	रे	ग	ग	ग	–	–,	प	ध	सां	गं	गं
ले	ऽऽ	ऽ	के	आ	ऽ	ई	ऽ	हूँ	ऽ	ऽ,	पि	ला	ऽ	दो	ऽ
×				2				×				2			

गं	गं	गं	मं	मं	रें	सां	गरें	नी	नी	–	सां	ध	प	म	गरे
प्रे	ऽ	ऽ	म	का	ऽ	अ	ऽऽ	मृ	त	ऽ	पि	पा	ऽ	सा	ऽऽ
×				2				×				2			
म	म	म	ध	म	धप	म	ग	ग	–	–,	ग	ग	ग	म	म
ले	ऽ	ऽ	के	आ	ऽऽ	ई	ऽ	हूँ	ऽ	ऽ,	तु	म्हा	ऽ	रे	ऽ
×				2				×				2			

–:अन्तरा :–

											गं	गं	गं	गं	गं
											र	त	नं	अ	न
								×				2			
–	रें	गं	रें	नी	धप	ध	प	प	–	–	सां	ध	पम	प	ग
ऽ	मो	ऽ	ल	ला	ऽऽ	ते	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ने	वा	ऽऽ	लें	ऽ
×				2				×				2			
ग	ध	सां	सां	सांगं	रेंगं	सां	नी	सां,	सां	–	ध	प	म	प	मप
ऽ	भें	ऽ	ट	कोऽ	ऽऽ	ते	ऽ	री,	भें	ऽ	ट	को	ऽ	ते	ऽऽ
×				2				×				2			
ग,	सां	–	ध	प	म	प	मप	ग	–	–,	ग	ग	ग	म	म
री,	में	ऽ	ट	को	ऽ	ते	ऽऽ	री	ऽ	ऽ,	मैं	के	ऽ	व	ल
×				2				×				2			

'' **मैं केवल'' यह पंक्ति स्थाई की भाँति गानी है। शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने हैं–**

"ओम नाम प्रिय बोल रे प्रिय"

ओम नाम प्रिय बोल रे, प्रिय बोल रे, तोहे शन्ति मिलेगी ।।

प्रभु की अनुपम ज्योति निरख ले

ज्ञान चक्षु को खोल रे ।।

तोहे शान्ति..........

धर्म कर्म की हाट लगाले

पूरा पूरा तोल रे ।।

तोहे शान्ति..........

राग–द्वेष अभिमान त्याग दे

प्रेम प्रीति रस घोल रे ।।

तोहे शान्ति..........

विषयों में मत खो "प्रकाश" तू

मानुष तन अनमोल रे ।।

तोहे शान्ति..........

*****

–: स्थाई :–

–	सां	सां	नीध	धनी	नी	धप	मप	ध	ध	ध	नी	प	म	म	म
ऽ	ओ	म	नाऽ	ऽऽ	म	प्रिऽ	यऽ	बो	ऽ	ऽ	ल	रे	ऽ	प्रि	य
×				2				×				2			
ग	ग	ग	म	प	–	प	ग	रे	रे	रे	म	गम	रेग	सा	–
बो	ऽ	ऽ	ल	रे	ऽ	तो	है	शां	ति	ऽ	मि	लेऽ	ऽऽ	गी	ऽ
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

–	ध	ध	ध	ध	प	धसां	नी	–	ध	म	प	ग	रे	म	–
ऽ	प्र	भु	की	अ	नु	पऽ	म	ऽ	ज्यो	ति	नि	र	ख	लें	ऽ
×				2				×				2			
रें	रें	रें	सां	–	रें	रें	नी	–	सां	सां	रेंग	रें	सां	–	–
ऽ	ज्ञा	न	च	ऽ	क्षु	को	ऽ	ऽ	खो	ऽ	लऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
–	सांरे	सांनी	नी	नीसां	नीध	ध	पम	म	–	–	ग	रे	ग	सा	–
ऽ	ज्ञाऽ	नऽ	च	ऽऽ	क्षु	को	ऽऽ	खो	ऽ	ऽ	ल	रें	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
–	सां	सां	नीध	धनी	नी	धप	मप	ध	ध	ध	नी	प	म	म	म
ऽ	ओ	म	नाऽ	ऽऽ	म	प्रिऽ	यऽ	बो	ऽ	ऽ	ल	रे	ऽ	प्रि	य
	×				2				×				2		
ग	ग	ग	म	प	–	प	ग	रे	रे	रे	म	गम	रेग	सा	–
बो	ऽ	ऽ	ल	रे	ऽ	तो	हे	शाँ	ति	ऽ	मि	लेऽ	ऽऽ	गी	ऽ
×				2				×				2			

" करुणा निधे टेर सुनलो "

करुणा निधे टेर सुन लो हमारी ।
आए शरण में हरो विपद सारी ।।

सूझे न कोई हमें है डगरिया ।
छाई अविद्या घटा कारी कारी ।।

साहस न हारें कभी शक्ति दीजे ।
उर में भरो भव्य भक्ति तुम्हारी ।।

तुम तज कहाँ अब " प्रकाशार्य " जाए ।
केवल तुम्हारा भरोसा है भारी ।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

सां	सां	ध	नी	धम	मध	नीध	मग	मग	सा
क	रू	णां	ऽ	निऽ	धेऽ	ऽऽ	टेऽ	ऽऽ	र
×		2			0		3		
सा	सा	ध	–	नी	सा	म	म	म	म
सु	न	लो	ऽ	ह	मा	ऽ	री	ऽ	ऽ
×		2			0		3		
ग	ग	म	ध	नी	सां	सां	गं	नी	सां
आ	ऽ	ये	ऽ	श	र	ण	में	ऽ	ह
×		2			0		3		
नी	नी	नी	–	नी	धनी	सांनी	धनी	धम	गसा
रो	वि	प	ऽ	द	साऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ
×		2			0		3		

– : अन्तरा : –

ग	ग	म	ध	नी	सां	सां	गं	नी	सां
सू	ऽ	झे	ऽ	न	को	ऽ	ई	ऽ	ह
×		2			0		3		
नी	नी	नी	–	नी	धनी	सांनी	ध	नी	म
में	ऽ	है	ऽ	ड	गऽ	रिऽ	या	ऽ	ऽ
×		2			0		3		
सां	सां	नीसां	गं	सां	नी	सां	ध	नी	म
छा	ऽ	ईऽ	ऽ	अ	वि	ऽ	द्या	ऽ	घ
×		2			0		3		
नी	नी	नी	–	नी	धनी	सांनी	धनी	धम	गसा
टा	ऽ	का	ऽ	री	काऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ
×		2			0		3		

शेष अन्तरे इसी प्रकारे से गाने हैं-

निम्नलिखित सरगम को स्वरों के उच्चारण एवं आकार में गा सकते हैं –

1.	मग	मग	मध	नीसां	धनी	सांनी	सांनी	धनी	धम	गसा
	×		2			0		3		
2.	सांगं	मंग	सांनी	धम	गम	गसा	गम	गसा	गम	गसा
	×		2			0		3		
3.	साग	साम	–म	गम	गध	–ध	मध	मनी	नी	धनी
	धसां	–सां	सांनी	धम	गम	गसा	धनी	सांध	नीसां	धनी
	×		2			0		3		
4.	साम	गम	धम	गम	गम	धनी	धम	गम	गम	गम
	धम	धम	मध	नीसां	धनी	सांसां	धनी	सांगं	नीसां	नीसां
	धनी	धम	धम	गम	गम	धनी	सांनी	धम	गम	गसा
	×		2			0		3		

भक्ति की झनकार

भक्ति की झनकार उर के तार में कर्त्तार भर दो ।।
लौट जाए स्वार्थ ईर्ष्या द्वेष दम्भ निराश होकर ।
आज मेरे मन भवन में देव इतना प्यार भर दो ।।

बात जो कह दूँ हृदय में वो उतर जाए सभी के ।
इस निरस मेरी गिरा में वह प्रभाव अपार भर दो ।।

कृष्ण के सदृश सुदामा प्रेमियों के पाँव धोने ।
नयन में मेरे तरंगित अश्रु पारावार भर दो ।।

पीड़ितों को दूँ सहारा और गिरतों को उठालूँ ।
बाहुंओ में शक्ति ऐसी ईश सर्वाधार भर दो ।।

रंग झूठे सब जगत के ये 'प्रकाश' विचार देखा ।
शुष्क जीवन में सुघड़ निजरंग परमोदार भर दो ।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

–	सा	–	म	धध	ध	म	ग	मग	म	रे	रे	रे	रे	नी	–
ऽ	भ	ऽ	क्ति	की	ऽ	झ	न	काऽ	ऽ	ऽ	र	उ	र	के	ऽ
×				2				×				2			
–	नी	रे	रे	ग	–	–	–	ग	म	–	सां	नी	ध	ध	–
ऽ	ता	ऽ	र	में	ऽ	ऽ	ऽ	कर	ता	ऽ	र	भ	र	दो	ऽ
×				2				×				2			

- : अन्तरा : -

–	म	–	ध	सां	–	सां	–	–	ध	सां	ध	म	ग	ग	–
ऽ	लौ	ऽ	ट	जा	ऽ	ए	ऽ	ऽ	स्वा	ऽ	र्थ	ई	ऽ	र्ष्या	ऽ
×				2				×				2			
–	ग	–	प	नी	–	नी	नी	–	रें	सां	नी	सां	–	सां	–
ऽ	द्वे	ऽ	ष	दं	ऽ	भ	नि	ऽ	रा	ऽ	श	हों	ऽ	कर	ऽ
×				2				×				2			
–	सा	–	म	धध	ध	म	ग	मग	म	रे	रे	रे	रे	नी	–
ऽ	आ	ऽ	ज	मेऽ	ऽ	रे	ऽ	मन	ऽ	ऽ	भ	व	न	में	ऽ
×				2				×				2			
–	नी	रे	रे	ग	ग	ग	–	–	ग	म	सां	नी	ध	ध	–
ऽ	दे	ऽ	व	इ	त	ना	ऽ	ऽ	प्या	ऽ	र	भ	र	दो	ऽ
×				2				×				2			

आलाप

सां	–	–	–	–	–,	नी	सां	रें	–	–	–	–,	मं	रें	नी
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ
प	–	–	–	–,	सां	प	ध	ध	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
ऽ	भ	ऽ	क्ति												
×															

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने हैं -

"मन अब प्रभु के ही"

मन अब प्रभु के ही हो रहिए ।

प्रभु के नेह लगन में निशदिन ।
भली बुरी सब ही की सहिए ।।

प्रभु की पावन शरण छोड़ कर ।
और कौन का आँचल गहिए ।।

और करेंगे लोग हँसी सब ।
हृदय व्यथा न किसी से कहिए ।।

पाया प्रेम "प्रकाश" परम धन ।
प्रेमी जन को फिर क्या चाहिए ।।

*****

ताल-त्रिताल अथवा कहरवा

-: स्थाई :-

				ध	ध	प	प	म	ध	प	म	ग	सां	ग	ग
				म	न	अ	ब	प्र	भु	के	ऽ	ही	ऽ	हो	ऽ
×				2				0				3			
म	गुम	रे	–	–	–	गुम	रे	ग	ग	ग	रे	म	म	गुम	रेग
र	हिऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	प्र	भु	के	ऽ	ही	ऽ	होऽ	ऽऽ
×				2				0				3			
सा	सा	सा	–	ध	ध	प	प								
र	हि	ए	ऽ	म	न	अ	ब								

-: अन्तरा :-

								प	ध	म	प	गुम	रे	रे	रेग
								प्र	भु	के	ऽ	नेऽ	ऽ	ह	लऽ
×				2				0				3			
म	म	ध	धनी	प	प	प	प	प	ध	सां	सांरे	नीरें	सां	ध	म
ग	न	में	ऽऽ	नि	शि	दि	न	भ	ली	ऽ	बुऽ	रीऽ	ऽ	स	ब
×				2				0				3			
रे	ध	ध	ध	ध	ध	प	–	म	ध	प	म	गरे	सा	ग	ग
ही	की	ऽ	ऽ	स	हि	ए	ऽ	प्र	भु	के	ऽ	हीऽ	ऽ	हो	ऽ
×				2				0				3			
पम	ग	रे	–	–	–	गुम	रे	ग	ग	ग	रे	म	म	ग	रे
रऽ	हि	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	प्र	भु	के	ऽ	ही	ऽ	हो	ऽ
×				2				0				3			
सा	सा	सा	–												
र	हि	ए	ऽ												
×															

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने है-

प्रीत तुमसे लगी

प्रीत तुमसे लगी माया को प्यार कौन करे ।
कोई कुछ भी कहे इसका विचार कौन करे ।।
मन है सुन्दर तो रुप रंग सभी सुन्दर हैं ।
व्यर्थ अस्थिर बनावटी शृंगार कौन करे ।।
छोड़ दी तेरे भरोसे ही भँवर में नैया ।
मूढ़ माँझी की विनय बार बार कौन करे ।।
बन गई अश्रु मोतियों की लड़ी देखो तो ।
भेंट अब तुमको ये फूलों के हार, कौन करे ।।
मांगना है जो वही माँग लेगा, तुझसे "प्रकाश" ।
बनके भिक्षुक पुकार द्वार द्वार कौन करे ।।

*****

ताल-दादरा

-: स्थाई :-

								सां	नी	ध	म
								प्री	त	तु	म
						×			2		
ग	–	ग	ग	–	मप	म	–	ग	सा	नी	ध
से	ऽ	ल	गी	ऽ	माऽ	या	ऽ	को	प्या	ऽ	र
×			2			×			2		
रे	रे	ग	रेग	सा	सा	–	–,	रें	नी	ध	प
कौ	ऽ	न	कऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ,	को	ई	कु	छ
×			2			×			2		
प	प	मं	प	प	धनी	ध	म	ग	सा	नी	ध
भी	ऽ	क	है	ऽ	इस	का	ऽ	वि	चा	ऽ	र
×			2			×			2		

रे	रे	ग	रेग	सा	सा	–	–,				
कौ	ऽ	न	कऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ,				
×			2			×					

-: अन्तरा :-

								म	ध	सां	नी
								मन	है	सुँ	ऽ
								×			2
सां	सां	सां	सां	ध	म	म	रें	रें	रें	रें	–
द	र	तो	रु	ऽ	प	रँ	ऽ	ग	स	भी	ऽ
×			2			×			2		
मं	गं	रें	सां	सां	–	मं	मं	पुमं	गं	गं	मंगं
सुँ	ऽ	द	र	है	ऽ	आ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ
×			2			×			2		
रें	रें	गंरें	म	ध	रें	सां	–,	म	ध	सां	नी
ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	मन	है	सुँ	ऽ
×			2			×			2		
सां	सां	सां	सां	ध	म	म	रें	रें	रें	रें	–
द	र	तो	रु	ऽ	प	रँ	ऽ	ग	स	भी	ऽ
×			2			×			2		
मं	गं	रें	सां	सां	–	–	–,	सां	नी	ध	म
सुँ	ऽ	द	र	है	ऽ	ऽ	ऽ,	व्य	र्थ	अ	ऽ
×			2			×			2		
ग	ग	ग	ग	–	मप	म	–	ग	सा	नी	ध
स्थि	र	ब	ना	ऽ	वऽ	टी	ऽ	श्रृँ	गा	ऽ	र
×			2			×			2		
रे	रे	ग	रेग	सा	सा	–	–,	सां	नी	ध	म
कौ	ऽ	न	कऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ,	प्री	त	तु	म
×			2			×			2		

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने है –

"अब तो केवल तेरी आस"

अब तो केवल तेरी आस।
तुमसे लगन लगी निशिवासर तेरा ही विश्वास।।

सूर्य चन्द्र से दीप रचाता तेरा भृकुटि विलास ।
तेरी परम पावनी सत्ता में है सबका वास ।।

पीर न जाने कोई मन की करत सभी उपहास ।
करुणाघन तुम बिन चातक की कौन बुझाए प्यास ।।

कैसा शोक क्लेश, भय किसका जब तू मेरे पास।
तजकर तेरी चरण-शरण अब जाए कहाँ 'प्रकाश'।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

				सा	सा	रे	म	गप	म	ग	रे	सा	ध़	नी़	सा
				अ	ब	तो	ऽ	केऽ	ऽ	व	ल	ते	ऽ	री	ऽ
×				2				×				2			
सा	ध़	–	ध	ध	ध	नी	रें	सां	सां	सां	सां	–	धसां	ध	म
आ	ऽ	ऽ	स	ते	ऽ	री	ऽ	आ	ऽ	ऽ	स	ऽ	तेऽ	ऽ	री
×				2				×				2			
रे	रे	नी़सा	ध़	सा	सा	रे	म,	ध	ध	नी	सां	सां	सां	सां	मं
आ	ऽ	सऽ	ऽ	अ	ब	तो	ऽ,	तु	झ	से	ऽ	ल	ग	न	ल
×				2				×				2			

रें	नी	नी	प	ध	ध	ध	ध	प	नी	ध	प	म	रे	नी	नी
गी	ऽ	नि	शि	वा	ऽ	स	र	ते	ऽ	रा	ऽ	ही	ऽ	वि	श
×				2				×				2			
सा	–	–	सा	सा	सा	रे	म								
वा	ऽ	ऽ	स	अ	ब	तो	ऽ								
×				2											

-: अन्तरा :-

								म	रे	म	प	ध	ध	ध	–
								सू	ऽ	र्य	च	ऽ	न्द्र	से	ऽ
								×				2			
प	–	प	प	पर्म	धप	म	–	प	नी	ध	प	म	रे	सां	सां
दी	ऽ	प	र	चाऽ	ऽऽ	ता	ऽ	ते	ऽ	रा	ऽ	भृ	कु	टि	वि
×				2				×				2			
नी	नी	सां	नी	ध	ध	ध	–	ध	ध	नी	सां	सां	सां	सां	मं
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ते	ऽ	री	ऽ	प	र	म	पा
×				2				×				2			
रें	नी	प	म	ध	–	ध	–	प	नी	ध	प	म	रे	नी	नी
ऽ	व	नी	ऽ	स	ऽ	त्ता	ऽ	में	ऽ	है	ऽ	स	ब	का	ऽ
×				2				×				2			
सा	–	–	सा	सा	सा	रे	म								
वा	ऽ	ऽ	स	अ	ब	तो	ऽ								
×				2											

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं -

भज ओम

"छोड़ और की आस बावरे"

भज ओम, भज ओम
मन मधुर नाम भज ओम

छोड़ और की आस बावरे, उसी एक का होजा रे ।
पाना है कुछ जग में तो फिर अपना सब कुछ खोजा रे ।।

कर सहायता तू सबकी यदि कुछ न बने इतना ही कर ।
दुखियाओं के घावों को निज नयन नीर से धोजा रे ।।
ओम...............

करना चाहे नाम जगत में अपना अमर शहीदों सा ।
तू भी उसकी मुण्डमाल में अपना शीश पिरोजा रे ।।
ओम...............

पशु पक्षी कीटादिक मर कर, भी सुख पहुँचा जाते हैं ।
तू तो मानव है सबके हित, सुख के साज संजोजा रे ।।
ओम...............

होना पार चाहता है यदि तू "प्रकाश" भवसागर से ।
तो निज नाव नेह सागर में अपने हाथ डुबोजा रे ।।
ओम...............

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

ध	ध	ध	ध	ध	ध,	प	ग	म	म	म	म	म	म,	रे	सा
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म,	भ	ज	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म,	म	न
×				2				×				2			
रे	ग	ग	ग	ध	ध	म	ग	ग	ग	ग	ग	ध	मग,	सा	ग
म	धु	र	ना	ऽ	म	भ	ज	ओ	ऽ	ऽ	म	ओ	मऽ,	भ	ज
×				2				×				2			

सां	सांसां	रेंगं	गं	गं	गंगं	-गं	गं	नी	-नी	-रें	रें	रें	रें	रें	-
छो	ड़औ	ऽर	की	आ	सबा	ऽव	रे	उसी	ऽए	ऽक	का	हो	जा	रे	ऽ
×				2				×				2			
ध	नी	सां	सांसां	सां	सां	सां	सां	म	प	ध	प	म	ग	सा	नीसा
पा	ना	है	उस	को	तो	पह	ले	अप	ना	सब	कुछ	खो	जा	रे	ऽऽ
×				2				×				2			

"ओम भज ओम" गाने के पश्चात्

-: अन्तरा :-

सां	सां	सां	सां	सां	रें	गं	मं	नी	रें	रें	सां	सां	सां	नी	ध
क	र	स	हा	ऽ	य	ता	ऽ	तू	ऽ	स	ब	की	ऽ	य	दि
×				2				×				2			
सां	सां	सां	सां	सां	रें	गं	मं	नी	रें	रें	सां	सां	सां	सां	सां
कु	छ	न	ब	ने	ऽ	इ	त	ना	ऽ	ही	ऽ	कर	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

"दुखियाओं के" यह पंक्ति भी इसी प्रकार गाना है -

सां	सां	रेंगं	गं	गं	गं	गं,	गं	नी	सां	रें	रें	रें	रें	रें	रें
कर	सहा	ऽय	ता	तू	सब	की,	यदि	कुछ	नाब	ने	इत	ना	ही	कर	ऽ
×				2				×				2			
ध	नी	सां	सां	सां	सां	सां	सां	म	प	-ध	प	म	ग	सा	नीसा
दुखि	या	ओं	के	घा	वों	को	निज	नय	ननी	ऽर	से	धो	जा	रे	ऽऽ
×				2				×				2			

"ओम भज ओम"---------------शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं -

"न मैं धाम धरती"

न मैं धाम धरती न धन चाहता हूँ ।
कृपा का तेरी एक कण चाहता हूँ ।।

रटे नाम तेरा वो चाहूँ मैं रसना
सुने यश तेरा वो श्रवण चाहता हूँ ।।

विमल ज्ञान-धारा से मस्तिष्क उर्वर
व श्रद्धा से भरपूर मन चाहता हूँ ।।

करे दिव्य दर्शन तेरा जो निरन्तर
वही ज्ञान रुपी नयन चाहता हूँ ।।

नहीं चाहना है मुझे स्वर्ग छवि की
मैं केवल तुम्हें प्राणधन चाहता हूँ ।।

"प्रकाशात्मा" में अलौकिक तेरा हे!
परम ज्योति प्रत्येक क्षण चाहता हूँ ।।

*****

ताल – कहरवा

–: स्थाई :–

										प	प	ध	सां	–	नी
										ना	मै	ऽ	धा	ऽ	म
								×				2			
सां	–	सां	–	सां	–	सां	–	–	–	नी	नी	नी	सां	–	रें
ध	ऽ	र	ऽ	ती	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ध	न	ऽ	चा	ऽ	ह
×				2				×				2			
नी	रें	सां	नी	ध	–	प	–	–	–,	ग	ग	ग	म	–	प
ता	ऽ	ऽ	ऽ	हूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	कृ	पा	ऽ	का	ऽ	ते
×				2				×				2			
ग	प	म	प	ग	म	रे	–	–	–,	म	ग	ग	रे	–	सा
री	ऽ	ऽ	ऽ	ए	ऽ	क	ऽ	ऽ	ऽ,	क	ण	ऽ	चा	ऽ	ह
×				2				×				2			
ध	–	–	–	प	–	–	–	–	–,	ग	ग	ग	म	–	प
ता	ऽ	ऽ	ऽ	हूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	कृ	पा	ऽ	का	ऽ	ते
×				2				×				2			
ग	प	म	प	ग	म	रे	–	–	–,	म	ग	ग	रे	–	सा
री	ऽ	ऽ	ऽ	ए	ऽ	क	ऽ	ऽ	ऽ,	क	ण	ऽ	चा	ऽ	ह
×				2				×				2			
सा	–	–	–	सा	–	–	–	–	–,						
ता	ऽ	ऽ	ऽ	हूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,						

–: अन्तरा :–

										म	म	प	ग	–	म
										र	टे	ऽ	ना	ऽ	म
								×				2			
प	सां	नी	रें	सां	–	–	–	–	–	सां	नी	सां	नी	प	प
ते	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वो	चा	ऽ	हूँ	ऽ	मैं
×				2				×				2			

ग	–	म	–	ग	–	–	–	–	–,	सा	सा	सा	ग	ग	म
र	ऽ	स	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	सु	ने	ऽ	य	श	ते
×				2				×				2			
प	सां	नी	रें	नी	ध	प	–	–	–,	प	प	प	ध	–	नी
रा	ऽ	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	श्र	व	ण	चा	ऽ	ह
ध	ध	प	प	प	–	–	–	–	–	–	–,	प	नी	सां	रें
ता	ऽ	ऽ	ऽ	हूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
गं	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	रें	नी	प	नी
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
रें	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–,	नी	रें	नी	ध
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
मं	–	ग	–	रे	–	–	–	–	–	–	–,	ध	–	ध	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
प	–	–	–	–	–	–	–	–	–,	म	म	प	ग	–	म
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	र	टें	ऽ	ना	ऽ	म
×				2				×				2			

अन्तरे की दोनों पंक्ति दुबारा गाकर, स्थाई गाएं–

" अक्षर ओम अनादि अपार"

अक्षर ओ३म अनादि अपार।
जगत पिता सबके आधार ।।

धरती-तल मे नभ-मण्डल में, मस्त पवन में, पावक जल में ।
व्यापक हो तुम हे ! कर्तार, जगत पिता सबके आधार ।।

अदभुत् माया पार न पाया, निराकार निर्लेप अकाया ।
रचा जगत कैसे ! साकार, जगत पिता सबके आधार ।।

सुर, मुनि साधु संत कवि गायक, कोयल मोर पपीहा चातक ।
सब गुण गाते बारम्बार, जगत पिता सबके आधार ।।

समय समय घन जल बरसाते, बन उपवन चहुँदिशि लहराते ।
सुखमय हो जाता संसार, जगतपिता सबके आधार ।।

कोष तुम्हारा खुला निरन्तर, पाते भोजन कीड़ी कुञ्जर ।
तुम सम कौन दयालु उदार, जगत पिता सबके आधर ।।

सब को कर्मों का फल देते, रिश्वत तुम न किसी से लेते ।
शुद्ध न्याय तेरा सरकार, जगत पिता सबके आधार ।।

पावन वेदामृत की धारा, की प्रदान ऋषियों के द्वारा ।
हैं तेरे अगनित उपकार, जगत पिता सबके आधार ।।

ज्ञान 'प्रकाश' हृदय में कर दो, भक्ति भावना उर में भर दो ।
विनय यही है बारम्बार, जगत पिता सबके आधार ।।

*****

ताल – त्रिताल

–: स्थाई :–

											गप	गरे	सा	–	रे
											अऽ	ऽऽ	क्ष	ऽ	र
								0				3			
(प)	–	ग	ग	ग	रे	ग	प	रे	–	सा,	ग	मं	प	नीध	नीसां
ओ	ऽ	म	अ	ना	ऽ	दि	अ	पा	ऽ	र,	ज	ग	त	ऽऽ	पिऽ
×				2				0				3			

नी	ध	प	प	ग	रे	ग	प	रे	–	सा,					
ता	ऽ	स	ब	के	ऽ	आ	ऽ	घा	ऽ	र,					
×				२				०				३			

–: अन्तरा :–

											ग	र्म	प	नीसां	नी
											सु	र	मु	ऽऽ	नि
												३			
सां	सां	सां	सांनी	प	नी	सांगं	रें	सांनी	धनी	प	प,	(नीचे लिखी सरगम गाएं)			
सा	ऽ	धु	संऽ	ऽ	त	कऽ	वि	गाऽ	ऽऽ	य	क,	पर्म	गर्म	पनी	–
×				२				०				३			
–	–	–	–	गं	सां	–	–	सां	नी	ध	प	र्म	ग	रे	सा
पनी	साग	रे	–	–	प	र्म	ध	म	र्म	ग,	सु	(प्रथम पक्तिं दुबारा गाएं)			
×				२				०				३			
												प	र्म	ग	म
												को	ऽ	य	ल
												३			
ग	रे	सा	सा	गर्म	प	प	र्म	प	–	प	प,	प	नी	सां	गं
मो	ऽ	र	प	पीऽ	ऽ	हा	ऽ	चा	ऽ	त	क,	स	ब	गु	ण
×				२				०				३			
सां	–	सां	सां,	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा,	गप	गरे	सा	–	रे
गा	ऽ	ते	ऽ,	बा	ऽ	रं	ऽ	बा	ऽ	र,	अऽ	ऽऽ	क्ष	ऽ	र
×				२				०				३			

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाएं

"कहदो यह बात जवानों से"

कहदो यह बात जवानों से।
लड़ती आई हैं जवानियाँ विपदाओं के तूफानों से ।।

बादल मे बिजली, भट्टी में जैसे ज़लता अंगारा है ।
सागर में ज्वार प्रचण्ड, म्यान मे जैसे खड्ग दुधारा है ।।
बरसाती नदी में जैसे पानी की ये तेज रवानी हैं ।
इस दुर्लभ मानव जीवन में ऐसे ही मस्त जवानी है ।
आँखों से देखा कई बार, है सुना खूब यह कानों से ।।

हाँ! इसी जवानी ने कितने ही गहरे सागर पाट दिए ।
हाँ! इसी जवानी ने ही अम्बरचुम्बी पर्वत काट दिए ।।
करके सब साफ झाड़ झंकड़ बीहड़ वन नगर विराट किये ।
धरती के अन्दर रहने के क्या! अजब निराले ठाठ किए ।।
हाँ! यही जवानी गई चाँद तारों के निकट विमानों से ।।

हाँ! यही जवानी निर्भय ज़लते अंगारो पर चलती है ।
हाँ! यही जवानी दमन चक्र चलने पर खूब मचलती है ।।
हाँ! यही जवानी स्वतंत्रता-हाला पी मस्त झूमती है ।
हाँ! यही जवानी फाँसी की रस्सी को ललक चूमती है ।।
हाँ! बिंध पाती हैं नहीं जवानी प्रबल काम के बाणों से ।।

हाँ! यही जवानी दीवानी धरती आकाश हिलाती है।
हाँ! यही जवानी मरुस्थली में सुरभित सुमन खिलाती है ।।
हाँ! यही जवानी हीन मृतक राष्ट्रों को पुनः जिलाती हैं ।
हाँ! यही जवानी क्रूर शासनों को धूल में मिलाती है ।।
करती न जवानी समझौता गद्दारों बेईमानों से ।।

अब उठो जवानो! कसो कमर, सुस्ती को तजो सँवर जाओ ।
विज्ञान, ज्ञान, बल, वैभव से भण्डार भारती भर जाओ ।।
करके चरित्र निर्माण प्रथम, निर्माण राष्ट्र का कर जाओ ।
इस मानव मण्डल में "प्रकाश" कर अपना नाम अमर जाओ ।।
शुभ शिक्षा लेते रहो महापुरुषों के तप बलिदानों से ।।

*****

–: स्थाई :–

														सा	ग
														क	ह
								×				2			
प	प	प	प	प	प	प	प	ध	ध	म	म	रे	रे,	रे	ग
दो	ऽ	य	ह	बा	ऽ	त	ज़	वा	ऽ	नों	ऽ	से	ऽ,	क	ह
×				2				×				2			
ऩी	ऩी	रे	रे	म	म	ग	म	ध	ध	प	मं	प	–	सां	नी
दो	ऽ	य	ह	बा	ऽ	त	ज	वा	ऽ	नों	ऽ	से	ऽ,	ल	ड़
×				2				×				2			
ध	ध	ध	ध	ध	ध	नी	सां	नी	प	प	प	प	–,	प	ग
ती	ऽ	आ	ऽ	ई	ऽ	हैं	ऽ	ज	वा	ऽ	नि	याँ	ऽ,	वि	प
×				2				×				2			
ग	प	प	प	नीं	नीं	सां	गं	रें	सां	सां	सां	सां	–	–	–
दा	ऽ	ओं	ऽ	के	ऽ	तू	ऽ	फ़ा	ऽ	नों	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

प्रथम आलाप गाएं उसके पश्चात् अन्तरा गाएं–

प	–	–	–	–,	सा	ग	म	सां	ध	–	–	–,	प	ध	सां
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ,	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
नी	नी,	प	नी	ध	ध,	म	ध	प,	सा	रे	ग	ग	–,	ग	प
ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	बा	ऽ
×				2				×				2			

सां	सां	सां	नी	सां	सां	नी	ध	प	नी	नी	नी	नी	–	ध	प
द	ल•	में	ऽ	बि	ज	ली	ऽ	भ	ऽ	ट्टी	ऽ	में	ऽ	जै	ऽ
×				2				×				2			
म	ध	ध	ध	ध	–	नी	रें	नी	ध	ध	प	प	–,	ग	प
से	ऽ	अं	ऽ	गा	ऽ	रा	ऽ	ज़	ल	ता	ऽ	है	ऽ,	सा	ऽ
×				2				×				2			

"सागर में" अगली पंक्ति इसी प्रकार से गानी है –

													,	प	सां
													,	ब	र
×				2				×				2			
गं	गं	गं	गं	गं	–	गं	–	मं	–	रें	–	नी	–	ध	प
सा	ऽ	ती	न	दी	ऽ	में	ऽ	जै	ऽ	से	ऽ	पा	–	नी	ऽ
×				2				×				2			
प	रें	रें	रें	रें	–	गं	मं	गं	रे	रें	सां	सां	–,	प	सां
की	ऽ	ये	ऽ	ते	ऽ	ज	र	वा	ऽ	नी	ऽ	है	ऽ,	इ	स
×				2				×				2			

"इस दुर्लभ " यह पंक्ति इसी प्रकार से गानी है –

														,सां	नीसां
														,आँ	ऽऽ
×				2				×				2			
ध	–	ध	–	ध	ध	नी	सां	नी	प	प	प	प	प	प	ग
खों	ऽ	से	ऽ	दे	ऽ	खा	ऽ	क	ई	ऽ	बा	ऽ	र,	है	ऽ
×				2				×				2			
ग	प	प	प	नी	नी	सां	गं	रें	सां	सां	सां	सां	–	सा	ग
सु	ना	ऽ	ख़ू	ऽ	ब	य	ह	का	ऽ	नों	ऽ	से	ऽ,	क	ह
×				2				×				2			

स्थाई लेने के बाद शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने है।

"वही चमक है वही दमक है"

वही चमक है वही दमक है वही करारी धार है।
कहता है यह कौन? हिन्द की कुन्द हुई तलवार है ।।
उठो जवानों देश दीवानों, भारत माँ के लाडलों ।।
छल बल से कोई हमको ले जीत दूसरी बात है ।
समर भूमि में हमे जीत ले, किसकी भला बिसात है ।।
हम जिसके विपरीत हो गये किस्मत उसकी सो गई ।
हम जिसके भी मित्र हो गये विजय उसी की हो गई ।।
बना बिजेता ब्रिटिश हिन्द के बल,साक्षी इतिहास है।
विक्टोरिया क्रॉस अब तक कितने वीरों के पास है।।
कम न किसी से किसी भाँति, हममें बल शक्ति अपार है ।। उठो ।।
भूल गये क्या? झाँसी की रानी की रण-हुंकार को ।
भूल गये क्या? कुँवरसिंह ताँत्या की बेड़ी मार को ।।
क्या सुभाष नेताजी का वह शौर्य न तुमको ज्ञात है।
अब भी वह आज़ाद हिन्द सेना जग में विख्यात हैं ।।
देश-प्रेम का जोश भरा हर वृद्ध नवयुवक बाल में ।
लिया मोरचा खूब क्रूर अँगरेज़ों से इम्फ़ाल में ।।
जिनकी बहादुरी का लोहा मान रहा संसार है ।। उठो ।।
दिखा चुके हैं विकट वीरता अभी हिन्द के मनचले ।
मार-मार गद्दारों के कर दिये पस्त सब हौसले ।।
यह माना हम हिन्दवासियों में मत-पन्थ अनेक हैं ।
देश-शत्रु के सर्वनाश करने को हम सब एक हैं।।
जिसके खेतों का खाया है अन्न पिया मृदु नीर है ।
उसकी रक्षा हेतु युद्ध करने को हृदय अधीर है ।।
बच्चा-बच्चा आज युद्ध में जाने को तैयार है ।। उठो ।।
याद रहे हम नहीं निबल का रक्त बहाना चाहते ।
हम ना किसी का वास छीनकर दास बनाना चाहते ।।
हम न किसी पर भी अनुचित आतंक जमाना चाहते ।
रामराज्य फिर हम "प्रकाश" भारत में लाना चाहते ।।
जो इन शुभ संकल्पों में रोड़ा अटकाना चाहते ।
सहनशीलता से जो अनुचित लाभ उठाना चाहते ।।
उन दैत्यों के दुर्ग तोड़ना भी अपना व्यापार है ।। उठो ।।

*****

–: स्थाई :–

म	–	–	–	–	–	गुम	गुम	सा	–	–	–	–	–,	ग	ग
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ
×				2				×				2			

ध	–	–	–	–	–	नीध	नीध	म	–	नीध	नीध	म	–	म	म
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

ध	ध	–	म	म	म	ग	–	म	म	–	रे	ग	ग	रे	सा
व	ही	ऽ	च	म	क	है	ऽ	व	ही	ऽ	द	म	म	है	ऽ
×				2				×				2			

नी	नी	–	सा	रे	–	ग	–	रे	ग	रे	ग	सा	–	–	–
व	ही	ऽ	क	रा	ऽ	री	ऽ	धा	ऽ	ऽ	र	है	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

अगली पंक्ति "कहता है यह" इसी प्रकार से गाएं –

म	ध	–	म	रें	रें	सां	–	म	ध	ध	म	रें	रें	सां	–
उ	ठो	ऽ	ज	वा	ऽ	नों	ऽ	दे	ऽ	श	दी	वा	ऽ	नों	ऽ
×				2				×				2			

रें	–	रें	नी	ध	प	नी	ध	ध	–	–	प	म	–	–	–
भा	ऽ	र	त	माँ	ऽ	के	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ड	लों	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

म	म	म	म	म	–	म	–	म	–	म	म	म	–	म	–
छ	ल	ब	ल	से	ऽ	को	ऽ	ई	ऽ	ह	म	को	ऽ	ले	ऽ
×				2				×				2			

ग	–	ग	म	सा	सा	ग	–	म	–	–	म	म	–	–	–
जी	ऽ	त	दू	ऽ	स	री	ऽ	बा	ऽ	ऽ	त	है	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

" समर भूमि में " अगली पंक्ति इसी प्रकार से गानी है

प	प	प	प	प	–	प	प	प	–	प	प	–	प	प	–
ह	म	जि	स	के	ऽ	वि	प	री	ऽ	त	हो	ऽ	ग	ए	ऽ
×				2				×				2			
प	–	ध	ध	म	म	प	–	ध	–	–	ध	ध	–	–	–
कि	स्	म	त	उ	स	की	ऽ	सो	ऽ	ऽ	ग	ई	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

"हम जिसके भी" अगली पंक्ति इसी प्रकार से गानी है –

नी	नी	–	नी	नी	–	नी	–	नी	नी	नी	नी	–	नी	नी	–
ब	ना	ऽ	वि	जे	ऽ	ता	ऽ	ब्रि	टि	श	हि	ऽ	न्द	के	ऽ
×				2				×				2			
प	प	प	–	ध	–	रें	रें	सां	–	–	सां	सां	–	–	–
ब	ल	सा	ऽ	क्षी	ऽ	इ	ति	हा	ऽ	ऽ	स	है	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

" विक्टोरिया क्रास " अगली पंक्ति इसी प्रकार से गानी है –

सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	–	नी	नी	–	ध	–	ध	ध	ध
क	म	ना	कि	सी	ऽ	से	ऽ	कि	सी	ऽ	भाँ	ऽ	ति	ह	म
×				2				×				2			
प	–	प	प	म	–	म	प	ग	म	रे	ग	सा	–	–	–
में	ऽ	ब	ल	श	ऽ	क्ति	अ	पा	ऽ	ऽ	र	है	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं–

"महक दे सिल पै"

महक दे सिल पै घिस कर, हम उसे चन्दन समझते हैं।
वतन पर मर मिटे उसका सफल जीवन समझते हैं।।

सिपाही खेलते रणभूमि में हैं ख़ून की होली
लड़ाई के दिनों को मस्त ऋतु फागन समझते है।।

बुझाई आग ना जलती भजन करने को जा बैठे
नहीं ये भक्ति इसको लोग मुर्दापन समझते हैं।।

वो कोई और ही होंगे कि जो मरने से डरते हैं
वतन पर मरने वाले मौत को दुल्हन समझते हैं।।

जो कोरी शान्ति चाहे कर "प्रकाश" आराम मरघट में
सुभट संसार को ही एक समराङ्गन समझते हैं।।

*****

ताल – कहरवा

–: स्थाई :–

											ग	ग	म	ध	प
											म	ह	क	दे	ऽ
								×				2			
ग	ग	ग	ग	रे	ग	रे	सा	सा	सा	–	सा	सा	ग	ग	म
सि	ल	पै	ऽ	घि	स	क	र	ह	म	ऽ	उ	से	ऽ	चं	ऽ
×				2				×				2			
म	ध	–	ध	ध	सां	ध	सां	ध	प	म	–	–	–	–	–
दन	ऽ	ऽ	स	म	झ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
–	–	–,	ध	प	ध	म	प	ग	–	–,	गं	रें	सां	सां	सां
ऽ	ऽ	ऽ,	स	म	झ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ,	व	त	न	प	र
×				2				×				2			

सां	सां	–	सां	सां	–	सां	रें	नी	–	–,	सां	नी	ध	ध	प
म	र	ऽ	मि	टे	ऽ	उ	स	का	ऽ	ऽ,	स	फ	ल	जी	ऽ
×				2				×				2			
प	नी	नी	सां	ध	ध	प	म॑	प	–	–	–	–	–	–	–
व	न	ऽ	स	म	झ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
–	–	–,	ध	प	ध	म	प	प	ग	–,	ग	ग	म	ध	प
ऽ	ऽ	ऽ,	स	म	झ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ,	म	ह	क	दे	ऽ
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

											ध	ध	सां	सां	रें
											सि	पा	ऽ	ही	ऽ
								×				2			
रें	गं	–	गं	रें	गं	रें	सां	सां	गं	रें	सां	नी	ध	ध	प
खे	ऽ	ऽ	ल	ते	ऽ	र	ण	भू	ऽ	ऽ	मि	में	ऽ	हैं	ऽ
×				2				×				2			
प	ध	ध	नी	रें	सां	नी	ध	ध	–	–,	सां	ध	प	म	ग
ख़ू	ऽ	ऽ	न	की	ऽ	हो	ऽ	ली	ऽ	ऽ,	अ	जी	ऽ	हाँ	ऽ
×				2				×				2			
रे	ग	ग	म	ध	प	प	ग	ग	–	–,	ग	ग	म	ध	प
ख़ू	ऽ	ऽ	न	की	ऽ	हो	ऽ	ली	ऽ	ऽ,	ल	ड़ा	ऽ	ई	ऽ
×				2				×				2			
ग	ग	ग	ग	रे	ग	रे	सा	सा	–	–	सा	सा	ग	ग	म
के	ऽ	ऽ	दि	नों	ऽ	को	ऽ	म	ऽ	ऽ	स्त	ऋ	तु	फा	ऽ
×				2				×				2			
म	ध	–	ध	ध	सां	ध	सां	ध	प	म	–	–	–	–	–
ग	न	ऽ	स	म	झ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
–	–	–,	ध	प	ध	म	प	प	ग	–,	गं	रें	सां	सां	सां
ऽ	ऽ	ऽ,	स	म	झ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ,	व	त	न	प	र
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने हैं

"लगी है आग हिन्द के चमन में"

लगी है आग हिन्द के चमन में उसे बुझाओं तो हम भी जानें ।
बनाई बातें बहुत वतन की दशा बनाओ तो हम भी जानें ।।

विवाह महफ़िल में नाच रंग में, लुटाया धन यदि तो क्या लुटाया ।
स्वदेश हित भामाशाह जैसे, जो धन लुटाओ तो हम भी जानें ।।

स्वदेश हित प्यारा देश छोड़ा, कुटुम्ब सुख साज प्राण छोड़े ।
सुभाष बाबू सी देश-सेवा, जो कर दिखाओ तो हम भी जानें ।।

विदेशियों को झुका-झुका सर, जो 'सर' कहाये तो क्या कहाये ।
कटाके सर भगतसिंह से सरदार, गर कहाओ तो हम भी जानें ।।

खुशामदें करके स्वार्थ के वश, जो माल मृदुखाये तो क्या खाये ।
ऋषि दयानन्द-से सत्यवक्ता हो, ज़हर खाओ तो हम भी जानें ।।

"प्रकाश" कंचन व कामिनी हित, लहू बहाया तो क्या बहाया ।
समर में भारत के सैनिकों सम, लहू बहाओ तो हम भी जानें ।

*****

–: स्थाई :–

म	नी	नी	गं	रें	सां	नी	प	ग	प	–	प	प	प	प	–
ल	गी	ऽ	है	आ	ग	हिं	ऽ	द	के	ऽ	च	म	न	में	ऽ
×				2				×				2			
रे	म	म	नी	ध	प	म	ग	रे	ग	म	म	म	–	म	–
उ	से	ऽ	बु	झा	ऽ	ओ	ऽ	तो	हम	ऽ	भी	जा	ऽ	ने	ऽ
×				2				×				2			
रें	गं	मं	गं	सां	–	सां	–	ध	नी	सां	नी	प	–	प	–
ब	ना	ऽ	ई	बा	ऽ	तें	ऽ	ब	हु	त	व	तन	ऽ	की	ऽ
×				2				×				2			
ग	प	प	नी	ध	ध	ध	–	ध	ध	गं	गं	रें	–	रें	–
द	शा	ऽ	ब	ना	ऽ	ओ	ऽ	तो	हम	ऽ	भी	जा	ऽ	ने	ऽ
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

नी	नी	–	नी	ध	सां	नी	नी	ध	सां	नी	प	प	प	प	–
वि	वा	ऽ	ह	म	ह	फ़ि	ल	में	ना	ऽ	च	रं	ग	में	ऽ
×				2				×				2			
ग	प	प	नी	ध	ध	ध	–	ध	मंगं	मंगं	गं	रें	–	रें	–
जो	धन	ऽ	लु	टा	ऽ	या	ऽ	तो	क्या	ऽऽ	लु	टा	ऽ	या	ऽ
×				2				×				2			
रें	गं	मं	गं	सां	सां	सां	–	ध	नी	सां	नी	प	–	प	–
स्व	दे	ऽ	श	हि	त	भा	ऽ	मा	शा	ऽ	ह	जै	ऽ	से	ऽ
×				2				×				2			
ग	प	प	नी	ध	ध	ध	–	रे	ग	ग	प	म	–	म	–
जो	धन	ऽ	लु	टा	ऽ	ओ	ऽ	तो	हम	ऽ	भी	जा	ऽ	ने	ऽ
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने हैं –

"वो दयानन्द योगी यति"

वो दयानन्द योगी यति, बीज सुख शाँति के बो गए।
मर के भी वो अमर हो गए ।।

निज पिताजी के प्यारे थे वो, माँ की आखों के तारे थे वो।
पूर्ण सन्यास व्रत धारकर, छोड़ परिवार वो चल दिये ।।
मानवों के भले के लिए, मानवों के भले के लिए ।। वो दयानंद।

कभी हिम पर्वतों पर चढ़े,कभी बीहड़ बनों में चले ।
चुभे काँटे थे पाँवो तले, धूप से अंग सारे जले ।।
पर नही सत्य पथ से टले,पर नही सत्यपथ से टले।। वो दयानंद।

हो रहे थे सभी भारती,पश्चिमी सभ्यता पर लट्टू ।
छोड़ बैठे थे निज धर्म को, बड़े पण्डित, पुजारी पट्टू।।
वेद की दिव्य गंगा बहा, मन का संशय सभी धो गये।। वो दयानन्द।

दया करके दयावान वो लाए अमृत थे जिनके लिए।
शोक! उन नामसझ लोगों ने हाय! प्याले ज़हर के दिये ।।
मात भारत के उज्जवल रतन, हाय! दीवाली को खो गये।। वो दयानन्द।

देह का दीप बुझने को था,दुख से जनता परेशान थी।
किन्तु ऋषिराज के उस समय, मुख पै मृदुमञ्जु मुसकान थी।।
शान्त मन हो "प्रकाशार्य" वो, बेद उपदेश देते रहे ।। वो दयानन्द।

तेरी हो पूर्ण इच्छा प्रभो! अन्त ये बैन मुख से कहे।
देख यह दृश्य गुरुदत्त सम, नास्तिक आस्तिक हो गये ।।
मात भारत के उज्ज्वल रतन, हाय! दीवाली को खो गये ।। वो दयानन्द।

*****

ताल – दादरा

–: स्थाई :–

									सा	–	रे
									वो	ऽ	द
						×			2		
रे	ग	ग	–	ग	–	ग	–	म	ध	–	प
या	ऽ	नँ	ऽ	द	ऽ	यो	ऽ	ऽ	गी	ऽ	य
×			2			×			2		
म	–	–	–	–	–	–	–	–	सा	–	रे
ति	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बी	ऽ	ज
×			2			×			2		
रे	ग	ग	–	ग	–	ग	म	म	–	ग	–
सु	ख	शाँ	ऽ	ति	ऽ	के	ऽ	बो	ऽ	ग	ऽ
×				2			×		2		
ग	–	–	–	–	–	–	–	–	सां	सां	सां
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	र	के
×			2			×			2		
नी	सां	सां	–	ध	–	ध	ध	नी	–	ध	–
भी	ऽ	वो	ऽ	अ	ऽ	म	र	हो	ऽ	ग	ऽ
×			2			×			2		
म	ग	–	–	–	–	–	–	–	ग	ग	म
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	र	के
×			2			×			2		
म	प	प	–	प	–	प	ध	गं	–	रें	–
भी	ऽ	वो	ऽ	अ	ऽ	म	र	हो	ऽ	ग	ऽ
×			2			×			2		
सां	–	–	–	–	–	–	–	–			
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ			
×			2			×			2		

–: अन्तरा :–

									सां	सां	रें
									नि	ज	पि
						×			2		
गं	–	गं	–	गं	मं	रें	–	–	गं	–	रें
ता	ऽ	जी	ऽ	के	ऽ	प्या	ऽ	ऽ	रे	ऽ	थे
×			2			×			2		
सां	–	–	–	–	–	–	–	–,	नी	–	सां
वो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	माँ	ऽ	की
×			2			×			2		
सां	रें	रें	–	नी	–	प	–	ध	सां	–	नी
आँ	ऽ	खों	ऽ	के	ऽ	ता	ऽ	ऽ	रें	ऽ	थे
×			2			×			2		
ध	–	–	–	–	–	–	–	–,	सां	सां	रें
वो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	पू	ऽ	र्ण
×			2			×			2		

अगली पंक्ति " पूर्ण सन्यास व्रत" इसी प्रकार से गानी है –

									सा	–	रे
									मा	ऽ	न
रे	ग	ग	–	ग	–	ग	–	म	ध	–	प
वों	ऽ	के	ऽ	भ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	के	ऽ	लि
×			2			×			2		
म	–	–	–	–	–	–	–	–,	सा	–	रे
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	मा	ऽ	न
×			2			×			2		

रे	ग	ग	–	ग	–	ग	म	म	म	–	ग
वों	ऽ	के	ऽ	भ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	के	ऽ	लि
×			2			×			2		
ग	–	–	–	–	–	–	–,	ध	सां	रें	मं
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	म	र	के	ऽ
×			2			×			2		
गं	–	–	–	–	–	–	–,	सां	गं	सां	ध
भी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	वो	ऽ	अ	ऽ
×			2			×			2		
प	प	–	–	–	–	–	–,	म	मं	ध	मं
म	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	हो	ऽ	ऽ	ग
×			2			×			2		
ग	–	–	–	–	–	–	–,	सा	सा	रे	म
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	हो	ऽ	ऽ	ग
×			2			×			2		
ग	–	–	–	–	–	–	–	–,	सा	–	रे
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	वो	ऽ	द
×			2			×			2		

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं –

"दयानन्द देव, वेदों का उजाला"

दयानन्द देव वेदों का उजाला ले के आए थे ।
करों में ओम की पावन पताका लेके आए थे ।

न थे धन, धाम मठ-मन्दिर न संग चेली न चेला था ।
हृदय में वे अटल विश्वास प्रभु का लेके आए थे।।

गऊ, विधवा, दलित, दुखिया, अनाथों दीन जन के हित ।
नयन में अश्रुकण मानस में करुणा ले के आए थे।।

अविद्या सिन्धु से आगणित, जनों के पार करने को ।
परम सुखदायिणी सत्ज्ञान नौका लेके आए थे।।

कोई माने न माने सच तो ये ऋषिराज ही पहले ।
स्वराज्य स्थापना का मंत्र सच्चा लेके आए थे ।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

											सा	ग	म	ध	ध
											द	या	ऽ	नँ	द
											×				2
ध	–	–	नी	सां	गं	रें	नी	सां	–	–	सां	ध	म	प	गरे
दे	ऽ	ऽ	व	वे	ऽ	दो	ऽ	का	ऽ	ऽ	उ	जा	ऽ	ला	ऽऽ
×				2				×				2			
म	–	–	ध	म	धप	म	ग	ग	–	–,	गं	रें	सां	सां	–
ले	ऽ	ऽ	के	आ	ऽऽ	ये	ऽ	थे	ऽ	ऽ,	क	रों	ऽ	में	ऽ
×				2				×				2			

–	नी	रें	सां	नी	ध	प	ग	म	(म)	–	ध	प	म	ग	रे
ऽ	ओ	ऽ	म	की	ऽ	पा	ऽ	व	न	ऽ	प	ता	ऽ	का	ऽ
×				2				×				2			
म	–	–	ध	म	धप	म	ग	ग	–	–,	सा	ग	म	ध	ध॒
ले	ऽ	ऽ	के	आ	ऽऽ	ये	ऽ	थे	ऽ	ऽ,	द	या।	ऽ	नँ	द
×			2				×				2				

–: अन्तरा :–

											गं	गं	गं	गं	गं
											ग	ऊ	ऽ	वि	ध
								×				2			
–	रें	गं	रें	नी	प	ध	प	प	–	–	सां	ध	म	प	ग
ऽ	वा	ऽ	द	लि	त	दु	खि	या	ऽ	ऽ	अ	ना	ऽ	थों	ऽ
×				2				×				2			
–	ध	–	नी	सां	मं	गं	गं॒	गं,	ग	–	म	प	ध	पध	मप
ऽ	दी	ऽ	न	ज	न	के	ऽ	हित,	दी	ऽ	न	ज	न	केऽ	ऽऽ
×				2				×				2			
ग,	ग	–	म	प	ध	पध	मप	ग	–	–	सा	ग	म	ध	ध॒
हित,	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	य	न	में	ऽ
×				2				×				2			

''नयन में'' यह पंक्ति स्थाई की प्रथम पंक्ति की भाँति गाना है

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं ।

"ऋषिवर दयानन्द नें"

ऋषिवर दयानन्द ने कीन्हा फिर से जीवित भारत देश।।

सुख–सम्पति से मुँह को मोड़ा, प्रिय परिजन से नाता तोड़ा ।
भोजन बसन शयन शैया की करी न चिंता लेश ।।

अविचल ब्रह्मचर्य व्रत धारा, सद् विद्या पर तन मन वारा ।
वेद धर्म का नाद बजाया, कर योगी का वेश।।

तर्क कुठार हाथ में लीन्हा, छल पाखण्ड नष्ट कर दीन्हा ।
वैदिक धर्म प्रचार करन हित, विचरे देश विदेश ।।

सबने घोर अविद्या त्यागी, भए वेद–मत के अनुरागी ।
दूर हुए भ्रम सारे सुनकर, अमृतमय उपदेश ।।

"प्रकाश" वेदों का फैलाकर, घोर तिमिर अज्ञान मिटाकर।
अस्त हुए दीवाली को भारत के दिव्य दिनेश।।

*****

ताल–कहरवा

–: स्थाई :–

												म	म	प	प
												ऋ	षि	व	र
												2			
ध	ध	–	ध	–	ध	ध	–	ध	–	ध	नी	ध	प	प	ध
द	या	ऽ	नं	ऽ	द	ने	ऽ	की	ऽ	न्हा	ऽ	फि	र	से	ऽ
×				2				×				2			
म	–	म	ध	प	–	प	प	ध	–	–	म,	म	म	प	प
जी	ऽ	वि	त	भा	ऽ	र	त	दे	ऽ	ऽ	श,	ऋ	षि	व	र
×				2				×				2			

प	ध	–	म	–	म	म	ग	रे	ग	ग	रे	सा	सा	रे	रे
द	या	ऽ	नें	ऽ	दे	ने	ऽ	की	ऽ	न्हा	ऽ	फिं	र	से	ऽ
×				2				×				2			
म	–	म	म	प	ध	म	मं	म	–	–	म,	म	म	प	प
जी	ऽ	वि	त	भा	ऽ	र	तं	दे	ऽ	ऽ	श,	ऋ	षि	व	र
×				2				×				2			

-: अन्तरा :-

ध	ध	ध	–	सां	सां	रें	–	रें	मं	मं	–	मं	–	मं	–
सु	ख	सं	ऽ	प	ति	से	ऽ	मुँ	ह	को	ऽ	मो	ऽ	ड़ा	ऽ
×				2				×				2			
सां	गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रें	रें	गं	रें	सां	सां	रें
प्रि	य	प	रि	ज	न	से	ऽ	ना	ऽ	ता	ऽ	तो	ऽ	ड़ा	ऽ
×				2				×				2			
प	नी	नी	नी,	नी	नी	नी,	सां	प	नी,	नी	–	नी	–	नी	–
भो	ऽ	ज	न,	व	स	न,	श	य	न,	शै	ऽ	या	ऽ	की	ऽ
×				2				×				2			
सां	रें	रें	रें	सां	–	नी	–	नी	सां	सां	नी	ध	प	म	प
क	री	ऽ	न	चिं	ऽ	ता	ऽ	ले	ऽ	ऽ	श	ऋ	षि	व	र
×				2				×				2			
प	ध	–	ध	–	ध	ध	–	–	–	–,	सां	म	म	प	प
द	या	ऽ	नँ	ऽ	द	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	हो	ऋ	षि	व	र
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने है-

"श्रीमद् दयानन्द म्हारो लीजो जी प्रणाम"

श्रीमद् दयानन्द ऋषिराज, ऋषिवर दयानन्द महाराज
म्हारो लीजो जी प्रणाम ।

हनुमान जीशा थे ल्याया इसी संजीवनी बूटी ।
जीशूं देख भारत लिछमनरी घणी मूरछा टूटी ।।

वा मूरख लोगां ही थाने विषरा प्याला प्याया ।
थे ऋषिराज जिणारे खातिर इमरतरा घटल्याया ।।

बार बार नर जनम लेर जो भेंट "प्रकाश" चढ़ावै ।
तो भी ना करजो थांको ऋषिराज चुकायो जावै ।।

*****

ताल-कहरवा

–: स्थाई :–

												सा	–	सा	नी
												श्री	ऽ	म	द्
										×		2			
सा	ग	ग	ग	म	प	प	प	म	ग	म	ग	सा	रे	सा	नी
द	या	ऽ	नं	ऽ	द	ऋ	षि	रा	ऽ	ऽ	ज	ऋ	षि	व	र
×				2				×				2			
सा	ग	ग	ग	म	प	प	प	म	ग	म	ग	सा	–	नी	–
द	या	ऽ	नं	ऽ	द	म	हा	रा	ऽ	ऽ	ज	म्हा	ऽ	रो	ऽ
×				2				×				2			
–	–	सा	ग	–	सा	–	नी	सा	–	–	सा,	सा	रे	सा	नी
ऽ	ऽ	ली	जो	ऽ	जी	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	म,	ऋ	षि	व	र
×				2				×				2			

–	–	नी	नी	नी	सां	सां	रें	सां	नी	रें	सां	ग	–	म	–
ऽ	ऽ	ली	जो	ऽ	जी	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	मं	म्हा	ऽ	रो	ऽ
×				2				×				2			
–	–	ग	ग	ग	म	–	प	म	ग	प	म	सा	–	सा	नी
ऽ	ऽ	ली	जो	ऽ	जी	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	म	श्री	ऽ	म	द
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

नी	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नी	सां	सां	नी	ध	प	प	म
ह	नु	ऽ	मा	ऽ	न	जी	ऽ	शा	ऽ	थे	ऽ	ल्या	ऽ	या	ऽ
×				2				×				2			
म	म	म	म	म	ग	म	प	ग	म	म	म	ग	–	–	–
इ	शी	ऽ	सं	जी	ऽ	व	नी	बू	ऽ	टी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
नी	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नी	सां	सां	नी	ध	प	प	म
जी	शूं	ऽ	दे	ऽ	ख	भा	ऽ	र	त	लि	छ	म	न	री	ऽ
×				2				×				2			
म	म	म	म	म	ग	म	प	ग	म	म	ग,	सा	–	सा	नी
ध	णी	ऽ	मू	ऽ	र	छा	ऽ	टू	ऽ	टी	ऽ,	श्री	ऽ	म	द
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने के बाद लय बढ़ाकर निम्नलिखित 'सरगम' गा सकते हैं ।

1.	सा	ग	म	ध	नी	सां	ध	नी	सां	नी	सां	नी	ध	नी	ध	म
	×				2				×				2			
	ग	म	ग	सा	ग	म	ग	सा	ग	म	ग	सा,	श्री	ऽ	म	द्
	×				2				×				2			
2.	सां	–	–	गं	सां	नी	ध	–	नी	–	–	सां	नी	ध	म	–
	ध	–	–	नी	ध	म	ग	–	म	–	–	ध	म	ग	सा	–
	सा	ग	म	ध	नी	सां	ध	नी	सां	–	–	–,	श्री	–	म	द्
	×				2				×				2			
3.	म	म	ग	ग	म	म	ग	ग	म	ध	नी	सां	ध	नी	सां	सां
	सां	नी	सां	नी	ध	नी	ध	म	ग	म	ग	सा,	श्री	ऽ	म	द्
	×				2				×				2			

"वेदों का डंका आलम में"

वेदों का डंका आलम में, बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने ।
हर जगह ओ३म् का झन्डा फिर, फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने।।

अज्ञान अविद्या की चहुँदिशि धन घोर घटाएँ छाई थीं ।
कर नष्ट उन्हें जग में 'प्रकाश' फैला दिया ऋषि दयानन्द ने।।

लुट गए लुटेरे घर में थे, सब माल लूट कर ले जाते ।
सोतों का हाथ पकड़ कर फिर, बिठला दिया ऋषि दयानन्द ने।।

कब्रों पर सिर को पटकते थे, काशी काबे में भटकते थे ।
दे ज्ञान उन्हें फिर मुक्ति मार्ग, दिखला दिया ऋषि दयानन्द ने।।

जो चीख चीख कर आठ पहर, करते थे निन्दा वेदों की ।
सर उनका वेदों के आगे, झुकवा दिया ऋषि दयानन्द ने।।

सब छोड़ चुके थे धर्म कर्म, गौरव गुमान ऋषि मुनियों का ।
फिर संध्या, हवन, यज्ञ करना, सिखला दिया ऋषि दयानन्द ने।।

विद्यालय गुरूकुल खुलवाए, कायम हर जगह समाज किए ।
आदर्श पुरातन शिक्षा का, बतला दिया ऋषि दयानन्द ने।।

बलिदान किया बलिवेदी पर, जीवन 'प्रकाश' हँसते-हँसते ।
सच्चे नेता बनकर सबको चेता दिया ऋषि दयानन्द ने।।

*****

ताल–कहरवा

–: स्थाई :–

												–	–	सा	रे
												ऽ	ऽ	वे	ऽ
ग	–	ग	–	ग	–	ध	–	म	रे	रे	रे	रे	–	सा	रे
दों	ऽ	का	ऽ	डं	ऽ	का	ऽ	आ	ऽ	ल	म	में	ऽ	ब	ज
×				2				×				2			
रे	म	म	म	म	प	नीध	प	ग	म	म	ग	ग	–,	प	ध
वा	ऽ	दि	या	ऋ	षि	ऽऽ	द	यां	ऽ	नं	द	ने	ऽ,	ह	र
×				2				×				2			
सां	सां	सां	सां	–	सां	रें	गं	रें	सां	सां	सां	सां	सां,	सां	सां
ज	ग	ह	ओ	ऽ	म	का	ऽ	झ	ऽ	न्डा	ऽ	फि	र,	फ	ह
×				2				×				2			
नी	रें	सां	नी	ध	ध	ध	ध	प	नी	ध	प	म	ग,	सा	रे
रा	ऽ	दि	या	ऋ	षि	ऽ	द	या	ऽ	नं	द	ने	ऽ,	वे	ऽ

–: अन्तरा :–

												–	–,	ग	ध
												ऽ	ऽ,	अ	ऽ
सां	–	सां	सां	सां	–	रें	गं	रें	सां	सां	सां	सां	सां,	सां	गं
ज्ञा	ऽ	न	अ	वि	ऽ	द्या	ऽ	की	ऽ	च	हुँ	दि	शि,	घ	न
×				2				×				2			
रें	नी	नी	नी	प	म	म	प	प	ध	ध	ध	ध	–,	ध	म
घो	ऽ	र	घ	टा	ऽ	एं	ऽ	छा	ऽ	ई	ऽ	थीं	ऽ,	क	र
×				2				×				2			
म	–	म	म	म	म	म॑	ध	म॑	ग	ग	ग	ग	ग,	ग	सा
न	ऽ	ष्ट	ठ	न्हें	ऽ	ज	ग	में	ऽ	प्र	का	ऽ	श,	फै	ऽ
×				2				×				2			
सा	ग	ग	ग	प	प	ध	सां	नी	ध	ध	ध	ध	–,	सा	रे
ला	ऽ	दि	या	ऋ	षि	ऽ	द	या	ऽ	नं	द	ने	ऽ,	वे	ऽ
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने हैं :–

"ऋषि ने बताई हमें"

ऋषि ने बताई हमें वैदिक डगरिया।
वैदिक डगरिया सुख शान्ति की नगरिया।।

घोर अविद्या सागर से जन
अगणित पार उतारण कारण

लाए ऋषिराज सत्यज्ञान की नवरिया ।।

ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश रचाया
सत्य असत्य का बोध कराया

मिथ्या मत-पन्थियों की बन्द की बजरिया।।

मातृ-शक्ति का मान बढ़ाया
वेद पठन अधिकार दिलाया

लीनी गऊ विधवा, अनाथों की ख़बरिया।।

*****

ताल - कहरवा

-: स्थाई :-

										सा	रे	–	म	–	प
										ऋ	षि	ऽ	ने	ऽ	ब
								×				2			
ध	–	नी	–	ध	–	प	–	–	–	म	रे	–	नी	–	सा
ता	ऽ	ई	ऽ	ह	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	वै	दि	ऽ	क	ऽ	ड
×				2				×				2			
म	ग	म	–	रे	–	–	–	–	–,	ध	ध	–	ध	–	ध
ग	ऽ	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	वै	दि	ऽ	क	ऽ	ड
×				2				×				2			

ध	ध	<u>नी</u>	[illegible]	ध	[illegible]	प	–	[illegible]	–	म	–	म	प	–	ध
ग	रि	या	ऽ	सु	ऽ	ख	ऽ	ऽ	ऽ	शां	ऽ	ति	की	ऽ	न
×				2				×				2			
म	–	प	–	<u>ग</u>	म	रे	<u>ग</u>	सा	–,	सा	रे	–	म	–	प
ग	ऽ	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	ऋ	षि	ऽ	ने	ऽ	ब
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

										ध	–	–	म	–	प
										घो	ऽ	ऽ	र	ऽ	अ
										×				2	
ध	–	–	–	ध	–	–	–	–	–,	नी	–	–	सां	–	रें
वि	ऽ	ऽ	ऽ	द्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	सा	ऽ	ऽ	ग	–	र
×				2				×				2			
सां	<u>नी</u>	रें	सां	<u>नी</u>	–	ध	–	–	–,	<u>रें</u>	<u>रें</u>	–	रें	गं	–
से	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ,	अ	ग	ऽ	णि	त	ऽ
×				2				×				2			
रें	<u>रें</u>	गं	रें	<u>नी</u>	–	ध	–	–	–	प	म	–	प	–	ध
पा	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	उ	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ऽ	र	ऽ	न
×				2				×				2			
प	म	ध	प	<u>ग</u>	म	रे	–	–	–,	सा	रे	–	म	–	प
का	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ,	ला	ए	ऽ	ऋ	ऽ	षि
×				2				×				2			

" लाए ऋषिराज " स्थाई की तरह गानी है। शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने हैं–

" अखिल विश्व कल्याण कारिणी "

अखिल विश्व कल्याणकारिणी वेद कथा घर घर हों ।
ओम पताका फहरे चहुँदिशि आर्य समाज अमर हो ।।
रहें दूर पद लिप्सा छल से भागे दलबन्दी दलदल से ।
राष्ट्र धर्म हित आर्यों का प्रत्येक कार्य मिलकर हो ।।
सिर न ईट पत्थर पर पटकें, मारे मारे कहीं न भटकें ।
सबका अविनाशी अकाय आराध्य एक ईश्वर हो।।
दुराचार पाखण्ड नष्ट हों, सभी सुखी हों, दूर कष्ट हों ।
अखिल विश्व का विषमय वातावरण शान्त सुखकर हो।।
एक समिति सुविचार एक हों, शुद्धा चाराहार एक हो ।।
एक संस्कृति सबकी भाषा एक, एक ही स्वर हो।।
सब जन जागें और जगाएँ, सेवा के रंग में रंग जायें ।
मातृभूमि की रक्षा के हित, शीश हथेली पर हो ।।
आर्य बनें दुर्गुण बिसरावें, सकल जगत को आर्य बनावें ।
वैदिक धर्म प्रचार हेतु तन, मन, धन न्यौछावर हो।।
बैरी का षड्यन्त्र व्यर्थ हो, सर्वभाँति भारत समर्थ हो ।
भूमंडल में आर्य जाति का, फिर 'प्रकाश' आदर हो ।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नी	–	नी	सां	नी	ध	प	प
अ	खि	ल	वि	ऽ	श्व	कल्	ऽ	या	ऽ	ण	का	ऽ	रि	णी	ऽ
×				2				×				2			
नी	–	नी	सां	ध	ध	प	मं	प	प	प	–	प	ग	प	ध
वे	ऽ	द	क	था	ऽ	घ	र	घ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

गं	–	गं	मं	गं	रें	सां	–	नी	नी	नी	सां	नी	ध	प	प
ओ	ऽ	म	प	ता	ऽ	का	ऽ	फ	ह	रे	ऽ	च	हुँ	दि	शि
×				2				×				2			
नी	–	नी	सां	नी	ध	प	म॑	प	प	प	–	म॑	प	ग	–
आ	ऽ	र्य	स	मा	ऽ	ज	अ	म	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
ग	–	ग	प	ग	सा	सा	सा	ग	म	ध	–	–	–	–	–।
आ	ऽ	र्य	स	मा	ऽ	ज	अ	म	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
ध	–	ध	ध	ध	–	ध	ध̱	ध	नी	रें	सां	–	–	–	–
आ	ऽ	र्य	स	मा	ऽ	ज	अ	म	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

-: अन्तरा :-

प	प	प	प	प	प	प	प	प	ध	ध	–	म	म	म	–
र	हें	ऽ	दू	ऽ	र	प	द	लि	ऽ	प्सा	ऽ	छ	ल	से	ऽ
×				2				×				2			
ध	–	ध	–	ध	ध	ध	ध̱	ध	नी	नी	नी	प	प	प	–
भा	ऽ	गें	ऽ	द	ल	बं	ऽ	दी	ऽ	द	ल	द	ल	से	ऽ
×				2				×				2			
गं	–	गं	मं	गं	रें	सां	सां	नी	नी	नी	सां	नी	ध	प	प
रा	ऽ	ष्ट्र	ध	ऽ	र्म	हि	त	आ	ऽ	यों	ऽ	का	ऽ	प्र	ऽ
×				2				×				2			
नी	–	नी	सां	नी	ध	प	म॑	प	प	प	–	म॑	प	ग	–
त्ये	ऽ	क	का	ऽ	र्य	मि	ल	क	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
ग	–	ग	प	ग	सा	सा	सा	ग	म	ध	–	–	–	–	–
आ	ऽ	र्य	स	मा	ऽ	ज	अ	म	र	ही	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
ध	–	ध	ध	ध	–	ध	ध̱	ध	नी	रें	सां	–	–	–	–
आ	ऽ	र्य	स	मा	ऽ	ज	अ	म	र	ही	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने है-

"मधुर वेद वीणा"

मधुर वेद वीणा बजाए चलाजा ।
जो सोते हैं उनको जगाए चलाजा ।

कुकर्मों की कीचड़ में जो फँस रहे हैं ।
अविद्या अँधेरे में जो धँस रहे हैं ।।
उन्हे सत्य पथ तू बताए चलाजा ।।

निराकार प्रभु है सभी में समाया ।
सभी फिर हैं अपने न कोई पराया ।।
घृणा फूट मन से मिटाए चलाजा ।।

चुराना नही लोभ-वश धन किसी का ।
दुखाना नहीं तुम कभी मन किसी का ।।
ये सन्देश घर घर सुनाए चलाजा ।।

जगत युद्ध की आग में जल रहा है ।
प्रबल चक्र अन्याय का चल रहा है ।।
मनुजता जगत् को सिखाए चलाजा ।।

अखिल विश्व में भावना भव्य भरके ।
स्वकर्त्तव्य उद्देश्य को पूर्ण करके ।।
तू ऋषिराज का ऋण चुकाए चलाजा ।।

"प्रकाशार्य" ग्रामों, गली हाट घर में ।
नगर देश देशान्तरों विश्व भर में ।।
दयानन्द की जय मनाए चलाजा ।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

								–	–,	ध़	सा	सा	म	म	ग
								ऽ	ऽ,	म	धु	र	वे	ऽ	द
								×				2			
म	–	–	–	म	–	–	–	–	–	सां	सां	–	सां	–	ध
वी	ऽ	ऽ	ऽ	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	जा	ऽ	ये	ऽ	च
×				2				×				2			
नी	नी	प	प	ग	ग	रे	रे	सा	–,	सां	सां	–	सां	–	मं
ला	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	जो	सो	ऽ	ते	ऽ	हैं
×				2				×				2			
रें	रें	नी	नी	नी	–	–	–	–	–	नी	नी	–	नी	–	रें
उन	ऽ	ऽ	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	गा	ऽ	ये	ऽ	च
×				2				×				2			
सां	सां	ध	ध	म	म	रे	रे	सा	–,	ध़	सा				
ला	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	म	धु				
×				2				×				2			

-: अन्तरा :-

									,	ध	ध	ध	ध	–	ध
									,	कु	क	र	मों	ऽ	की
								×				2			
ध	ध	म	म	रे	रे	सा	–	–	–	नी	नी	–	नी	नी	रें
की	ऽ	ऽ	ऽ	च	ड़	में	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ	ऽ	फँ	स	र
×				2				×				2			
सां	सां	ध	ध	म	म	रे	रे	सा	सा,	सां	सां	–	सां	–	मं
हे	ऽ	ऽ	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	अ	वि	ऽ	द्या	ऽ	अं
×				2				×				2			

रें	रें	नी	नी	नी	नी	नी	–	–	–	नी	–	–	नी	नी	रें
धे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ	ऽ	धँ	स	र
×				2				×				2			
सां	–	–	–	ध	ध	म	म	रे	सा,	ध़	सा	सा	म	म	ग
हे	ऽ	ऽ	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	उ	न्हें	ऽ	स	ऽ	त्य
×				2				×				2			
म	–	म	–	म	–	–	–	–	–,	सां	सां	–	सां	–	ध
प	ऽ	थ	ऽ	तू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	दि	खा	ऽ	ये	ऽ	च
×				2				×				2			
नी	नी	प	प	ग	ग	रे	रें	सा	सा,	ध़	सा	सा	म	म	ग
ला	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	म	धु	र	वे	ऽ	द

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं –

"सूर्य की लाली में"

सूर्य की लाली में और चन्द्र की उजाली में
बोलो वह कौन है ? बोलो वह कौन है ?
जो है हरियाली में वृक्षों की डाली-डाली में
बोलो वह कौन है? बोलो वह कौन है?

शिशु की बोली में कोयल की मधुर-हूकों में
प्रेमी पपीहा की पी पी में मयूर-हूकों में
शैल शिखरों में गगन के विशाल आँगन में
सिन्धु, सरिता में, सरोवर में, नगर में, वन में
लजीले नयन में, सुन्दर पवित्र यौवन में
धीर प्रणवीर में, दुखिया, मजूर निर्धन में
समा रहा है और मुस्कुरा रहा है जो
सभी को नाच नये निता नचा रहा है जो
बोलो वह कौन है ? बोलो वह कौन हैं ?

जिसने पानी से भरा है रुई सी बद़ली को
दे दी जिसने है चपलता व चमक बिजली को
ईख को दो मिठास और खटास इमली को
रंग दिया जिसने है फूलो को और तितली को
पत्ते पत्ते की न्यारी न्यारी है कतरन कैसी
हाथ में अपने कभी ली नही जिसने कैंची
जिसकी इच्छा के बिना फूल नहीं खिलता है
जिसकी सत्ता के बिना पत्ता नहीं हिलता है
बोलो ! वह कौन है ? बोलो वह कौन है ?

किस सफाई से ये मानुष का चोला जिसने सिया
और अचरज तो ये सूई न धागा हाथ लिया
सीप की सी चमकती आँख बनाई कैसी
और तबले सी रखदी बीच में स्याही कैसी

कौन सा! इसमें मसाला अजब लगाया है
आज तक ऐसा नमूना नही बन पाया है
साथ ही इसको वह प्रकाश भी प्रदान किया
छोटे से तिल में ही दिखलाई आसमान दिया
बोलो! वह कौन है ? बोलो वह कौन हैं ?

सब को करनी का यथा योग्य फल जो देता है
सदा निष्पक्ष न रिश्वत किसी से लेता है
एक रस है जो जन्मता न मरा करता है
सदा कल्याण का झरना जो झरा करता है
सूखी खेती को जो पल भर में हरा करता है
कीड़ी कुञ्जर सभी का पेट भरा करता है
विश्व का चक्र ये जिसके नियम से चलता है
भोर उगता है सूर्य साँझ समय ढलता है
बोलो! वह कौन है ? बोलो! वह कौन है ?

जिसके पाने में स्वर्ग की बहार कुछ भी नहीं
चक्रवर्ती स्वराज्य में है सार कुछ भी नही
जिसके सम्मुख कुबेर धन अपार कुछ भी नहीं
जिसके आगे किसी सुन्दर का प्यार कुछ भी नहीं
आग चकमक में है जैसे हवा गगन में है
लाली मेंहदी के पात में महक सुमन में है
जैसे मक्खन दही में पुतली ज्यों नयन में है
यूँ बसा जो "प्रकाश" प्राणियों के मन में है
बोलो ! वह कौन है ? बोलो! वह कौन है?

*****

–: स्थाई :–

			प्रथम आलाप गाएं			–	–	म	ध	नी	रें
								आ	ऽ	ऽ	ऽ
						×			2		
ां	–	–	–	–	–	–	–,	रें	मं	गं	रें
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ
ां	–	–	–	–	–	–	–	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ां	रें	सां	नी	सां	नी	ध	नी	ध	प	ध	प
ा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ा	–	–	म	प	–	म	–,	सा	सा	सा	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	सू	र्य	की	ऽ
			2			×			2		
ा	रे	रे	ग	ग	ग	रे	–	रे	सा	–	नी़
ा	ऽ	ली	में	औ	र	चँ	ऽ	द्र	की	ऽ	उ
नी़	सा	सा	रे	रे	–	सा	–,	सा	सा	सा	सा
ा	ऽ	ली	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ,	जो	है	ह	रि
ा	रे	रे	ग	ग	–	रे	–	रे	सा	–	नी़
ा	ऽ	ली	मे	वृ	ऽ	क्षों	ऽ	की	डा	ऽ	ली
नी़	सा	सा	रे	रे	–	सा	–	–	–	–	–
ा	ऽ	ली	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
			2			×			2		
–	–,	ध	–	नी	रें	सां	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ,	बो	ऽ	लो	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	ध	सां	ध	म	म	रे,	रे	म	म	–
ऽ	ऽ,	कौ	ऽ	न	ऽ	है	ऽ,	कौ	ऽ	न	ऽ
	नी़,	सा	रे	रे	–	सा	–,	सा	सा	सा	–
ऽ	ऽ	कौ	ऽ	न	ऽ	है	ऽ,	सू	र्य	की	ऽ
			2			×			2		

प्रत्येक अन्तरे के पहले आलाप गाकर अन्तरा गाएं –

–: अन्तरा :–

								म	ध	ध	नी
								शिं	शु	की	ऽ
						×			2		
नी	सां	सां	सां	सां	–	ध	सां	ध	म	ग	रे
बो	ऽ	ली	में	को	ऽ	य	ल	की	म	धु	र
गं	–	ग	म	म	–	–	–,	म	ध	ध	नी
कू	ऽ	कों	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ,	प्रे	मी	प	पी

दूसरी पंक्ति भी इसी प्रकार से गाएं–

								सा	सा	सा	सा
								शै	ल	शि	ख
						×			2		
सा	रे	रे	रे	रे	रे	रे	ग	ग	म	ध	ध
रें	ऽ	में	ग	ग	न	के	ऽ	वि	शा	ऽ	ल
प	म	म	म	म	–	–	–,	सा	सा	सा	सा
आँ	ऽ	ग	न	में	ऽ	ऽ	ऽ,	सि	न्धु	स	रिं

चौथी पंक्ति इसी प्रकार से गाएँ–

								म	ध	ध	नी
								ल	जी	ऽ	ले
						×			2		
नी	सां	सां	सां	सां	–	ध	सां	ध	म	ग	रे
न	य	न	मे	सुँ	ऽ	द	र	स	जी	ऽ	ले
ग	–	ग	म	म	–	–	–,	म	ध	ध	नी
यौ	ऽ	व	न	में	ऽ	ऽ	ऽ,	धी	र	प्र	ण
×			2			×			2		

छठी पंक्ति इसी प्रकार से गाएं–

								म	ध	–	नी
								स	मा	ऽ	र
नी	रें	रें	रें	रें	मं	रें	सां	सां	सां	–	सां
हा	ऽ	है	औ	ऽ	र	मु	ऽ	स्कु	रा	ऽ	र
ध	–	नी	सां	सां	–	–	–	म	ध	–	नी
हा	ऽ	है	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ऽ	स	भी	ऽ	को
नी	रें	रें	रें	रें	मं	रें	सां	सां	सां	–	सां
ना	ऽ	च	न	ए	ऽ	नि	त	न	चा	ऽ	र
ध	–	नी	सां	सां	–	सां	–	–,	रे	सा	सा
हा	ऽ	है	ऽ	जो	ऽ	तो	ऽ	ऽ,	बो	लो	ऽ
सा	रे	रे	ग	ग	ग	रे	–	–	सा	नी	–
वो	ऽ	कौ	ऽ	न	ऽ	है	ऽ	ऽ	बो	लो	ऽ
नी	सा	सा	रे	रे	–	सा	–	–	–	–	–
वो	ऽ	कौ	ऽ	न	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–,	ध	–	नी	रें	सां	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ,	बो	ऽ	लो	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–,	ध	सां	ध	म	म	रे,	रे	म	म	–
ऽ	ऽ,	कौ	ऽ	न	ऽ	है	ऽ,	कौ	ऽ	न	ऽ
रे	नी,	सा	रे	रे	सा	सा	–,	सा	सा	सा	–
है	ऽ,	कौ	ऽ	न	ऽ	है	ऽ,	सू	र्य	की	ऽ
×			2			×			2		

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाएँ –

"हे नन्द नन्दन"

हे नन्द-नन्दन ! असुर निकन्दन! भक्तों के हितकारी आ ।
भव-भय भंजन, जन-मन-रञ्जन, मोहन,संकटहारी आ ।।

पहले भी माधव! मधुसूदन! तूनें हमें उबारा था ।
समय-समय पर विपद-ग्रस्त भक्तों को दिया सहारा था ।।
दुष्टों के दल दमन-हेतु कर चक्र सुदर्शन धारा था ।
दैत्य कंस शिशुपाल आदि का पल में शीश उतारा था ।।
वही सुदर्शन चक्र चलाकर दैत्यों का मद-मान मिटा ।
भारत भाग्य उदय करने भारत में कृष्ण मुरारी आ ।।

आह! कभी इस पुण्य भूमि में था कैसा आनन्द अपार ।
दूध-दही की नदियाँ बहती रहती थीं हर घर के द्वार ।।
करता था योगेश! जहाँ के कुञ्जों में तू स्वयं विहार ।
आ उस जन्मभूमि मथुरा वृन्दावन की टुक दशा निहार ।।
लेकर ग्वाल बाल सँग अपने फिर मधुबन में धेनु चरा ।
भारत-भाग्य उदय करने भारत में कृष्ण मुरारी आ ।।

मोह-ग्रस्त जब पार्थ हुए, तुमने पावन उपदेश दिया ।
फिर कर्तव्यारुढ़ हुए कर में गाण्डीव सम्हाल लिया ।।
कोटि-कोटि जन का इस विधि तुमने जीवन उद्धार किया ।
योग-कला का कर प्रचार भय, विघ्नों का प्रतिकार किया ।।
हो 'प्रकाश' कर्तव्य बोध फिर वह गीता का ज्ञान सुना ।
भारत-भाग्य उदय करने भारत में कृष्ण मुरारी आ ।।

*****

–: स्थाई :–

ध	ध	म	ग	म	म	म	म	सां	सां	सां	ध	नी	प	ग	रे
हे	ऽ	नँ	द	नँ	ऽ	द	न	अ	सु	र	नि	कं	ऽ	द	न
×				2				×				2			
रे	रें	ग	म	ग	सा	नी	ध	ध	ध	नी	रे	सा	–	–	–
भ	ऽ	क्तों	ऽ	के	ऽ	हि	त	का	ऽ	री	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

अगलीपंक्ति " भव भय भंजन" भी इसी प्रकार से गानी है

– : अन्तरा :–

ध	ध	ध	ध	ध	ध	म	रे	म	नी	नी	ध	नी	नी	नी	नी
प	ह	ले	भी	मा	ऽ	ध	व	म	धु	सू	ऽ	द	न	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
नी	सां	सां	ध	ध	प	म	प	ग	ग	म	ध	प	म	म	म
तू	ऽ	ने	ऽ	ह	में	ऽ	उ	बा	ऽ	रा	ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

"समय समय पर" अगलीपंक्ति भी इसी प्रकार गानी है

सां	सां	सां	नी	सां	सां	सां	नी	सां	मं	मं	रें	रें	नी	नी	नी
दु	ऽ	ष्टों	ऽ	के	ऽ	द	ल	द	म	न	हे	ऽ	तु	क	र
×				2				×				2			
म	नी	नी	ध	नी	ध	नी	रें	सां	ध	ध	ध	ध	–	–	–
च	ऽ	क्र	सु	द	र	श	न	धा	ऽ	रा	ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

"दैत्य कंस" अगलीपंक्ति भी इसी प्रकार गानी है

ध	सां	नी	ध	प	प	प	प	प	नी	ध	प	म	ग	ग	ग
व	ही	ऽ	सु	द	र	श	न	च	ऽ	क्र	च	ला	ऽ	क	र
×				2				×				2			
सा	ग	ग	ग	म	म	ध	ध	प	म	म	म	म	–	–	–
दै	ऽ	त्यों	ऽ	का	ऽ	म	द	मा	ऽ	न	मि	टा	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

'भारत भाग्य" अगली पंक्ति भी इसी प्रकार से गानी है

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं

"प्यासों की प्यास बुझा न सके"

प्यासों की प्यास बुझा न सकें वो उजले घन किस काम के हैं ।
हो मुग्ध न मधुकर जिन पर वे, निर्गन्ध सुमन किस काम के हैं।।

जिसमें न नेह का नीर भरा,वे निठुर नयन किस काम के हैं ।
सुनते न किसी की व्यथा कथा वे बधिर श्रवण किस काम के हैं।।

है जहाँ स्नेह सत्कार शान्ति वह घास फूस की कुटी भली ।
हो जहाँ ईर्ष्या छल प्रपंच, वे भव्य भवन किस काम के हैं।।

है विदुर भक्त का शाक भला, माधव यूँ मुस्का कर बोले ।
बिन श्रद्धा के तेरे मेवे, हे दुर्योधन किस काम के हैं ।।

सोई आत्मा को जगा न दें, यदि भ्रान्ति भीरुता भगा न दें ।
तो ये "प्रकाश" तेरे प्रवचन, कविता गायन किस काम के हैं ।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

														सां	सां
														प्या	ऽ
ध	सां	ध	प	म	म	गम	धप	ग	ग	रे	रे	सा	सा	ग	म
सों	ऽ	की	ऽ	प्या	ऽ	सऽ	बुऽ	झा	ऽ	न	स	के	ऽ	वो	ऽ
×				2				×				2			
प	प	ध	नी	रे	सां	प	प	म	म	प	मप	ग	ग,	गं	गं
उ	ज	ले	ऽ	घ	न	कि	स	का	ऽ	म	केऽ	हैं	ऽ,	हो	ऽ
×				2				×				2			

रें	गं	रें	सां	नी	ध	प	प	नी	नी	सां	गं	रें	सां,	ग	म
मुं	ऽ	ग्ध	न	म	धु	क	र	जि	न	प	र	वे	ऽ,	नि	र
×				2				×				2			
प	प	ध	नी	रें	सां	ध	प	म	म	प	मप	ग	ग,	रे	रे̱रे
गं	ऽ	ध	सु	म	न	कि	स	का	ऽ	म	केऽ	हैं	ऽ,	कि	सऽ
×				2				×				2			
म	म	प	मप	ग	–,	रे	रे̱रे	म	म	प	मप	ग	–,		
का	ऽ	म	केऽ	हैं	ऽ,	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ		
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

														ध	ध̱
														जि	न
												2			
ध	ध	ध	ध̱	ध	ध	ध	–	सां	धप	म	प	ग	–,	ग	प
में	ऽ	न	ने	ऽ	ह	का	ऽ	नी	ऽऽ	र	भ	रा	ऽ,	वे	ऽ
×				2				×				2			
सां	सां	सां	सां	गं	रेंसा	ध	ध	ध̱	ध̱	ध	नी	ध	–,	ध	ध
नि	ठु	र	न	य	नऽ	कि	स	का	ऽ	म	के	हैं	ऽ,	कि	स
×				2				×				2			
म	म	प	मप	ग	–,	सां	धप	म	म	प	मप	ग	–,	सां	सां
का	ऽ	म	केऽ	हैं	ऽ,	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ,	सु	न
×				2				×				2			
ध	सां	ध	प	म	म	गम	धप	ग	ग	रे	सा	सा	सा,	ग	म
ते	ऽ	न	कि	सी	ऽ	कीऽ	ऽऽ	व्य	था	ऽ	क	था	ऽ,	वे	ऽ
×				2				×				2			
प	प	ध	नी	रें	सां	ध	प	म	म	प	मप	ग	ग,	सां	सां
ब	धि	र	श्र	व	ण	कि	स	का	ऽ	म	केऽ	हैं	ऽ,	प्यां	ऽ
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने है–

"आनन्द स्रोत बह रहा"

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है ।
अचरज ये, जल में रह के भी मछली को प्यास है।।

पूलों में ज्यूं सुवास ईख में मिठास है ।
भगवान का त्यों विश्व के कण-कण में वास है ।।

टुक ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही ।
जिसको तू ढूँढता वो सदा तेरे पास है ।।

कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिए ।
नर जन्म का उद्देश्य ना केवल विलास है।।

आनन्द मोक्षका न पा सकेगा तब तलक ।
तू जब तलक 'प्रकाश' इन्द्रियों का दास है ।।

*****

ताल-दादरा

-: स्थाई :-

											सा
											आ
						×			2		
ध	ध	प	धप	म	प	म	म	प	ग	–	गप
नँ	ऽ	द	स्रो	ऽ	त	ब	ह	र	हा	ऽ	और
×			2			×			2		
गरे	सा	म	रेसा	नी	ध	सा	सा	–	–	–	मध
तूऽ	ऽ	उ	दाऽ	ऽ	स	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अच
×			2			×			2		
सां	सां	गं	रें	नी	नी	ध	सांनी	ध	म	म	मध
र	ज	ये	ज	ल	में	र	हऽ	के	भीं	ऽ	मछ
×			2			×			2		

रें	रें	रें	रें	मग	रेग	सा	–	–	–	–,	सा
ली	ऽ	को	प्या	ऽऽ	सऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	आ
×			2			×			2		
ध	ध	सां	सांनी	धम	ग	म	प	–	–	–	
नँ	ऽ	द	स्रो	ऽऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	
×			2			×			2		

-: अन्तरा :-

											मप
											फूऽ
						×			2		
ध	ध	प	नीध	पम	प	ध	नी	नी	नी	नी	सां
लों	ऽ	में	ज्यूंऽ	ऽऽ	सु	वाँ	ऽ	स	ई	ऽ	ख
×			2			×			2		
ध	प	नी	नीसां	गरें	सांनी	नींसां	नीध	पध	मप	म	मप
में	ऽ	मि	ठाऽ	ऽऽ	सऽ	हैऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	फूऽ
×			2			×			2		
धसां	नीध	ध	पध	म	प	ध	पध	नी	नी	नी	सां
लोंऽ	ऽऽ	में	ज्यूंऽ	ऽ	सु	वा	ऽऽ	स	ई	ऽ	ख
×			2			×			2		
ध	प	नी	नीसां	गरें	सांनी	नीसां	नीध	पध	मप	म,	सा
में	ऽ	मि	ठाऽ	ऽऽ	सऽ	हैऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ,	भग
×			2			×			2		

अगली पंक्ति "भगवान का" स्थाई की भाँति गाना है-

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं –

"यह मत कहो कि जगमें"

यह मत कहो कि जग में कर सकता क्या अकेला ।
लाखों में काम करता है सूरमा अकेला ।।
आकाश में करोड़ों तारे हैं टिमटिमाते ।
अँधकार जग का हरता हैं चन्द्रमा अकेला ।।

लाखों ही जन्तुओं पर बिठलाके धाक अपनी ।
स्वाधीन सिंह वन में है घूमता अकेला ।।
होतें हैं ओखली में अनगिनत धान के कण ।
लेकिन सभी को मूसल दल डालता अकेला ।।

लोहे की पटरियों पर होते अनेक डिब्बे ।
लेकिन सभी को इञ्जन है खींचता अकेला ।।
लंकापुरी जलाके, असुरों का मद मिटाके ।
हनुमान रामदल में फिर आ गया अकेला ।।

इक रोज़ शहजहाँ के दरबार में अमरसिंह ।
दम अपनी कटारी का दिखला गया अकेला ।।
जापान में सजाके आज़ाद हिन्द सेना ।
जौहर "सुभाष नेता" बतला गया अकेला ।।

संसार का हितैषी वह वन्दनीय बापू ।
बल शाँति अहिंसा का दरसा गया अकेला ।।
था कुल जगत विरोधी, तिस पर ऋषि दयानन्द ।
ध्वज आर्य संस्कृति का फहरा गया अकेला ।।

*****

–: स्थाई :–

सा	सा	म	म	म	ध	–	ध	ग	ग	रे	–	–	–	–	–
य	ह	म	त	क	हो	ऽ	कि	ज	ग	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
नी	नी	रे	रे	रे	प	–	म	रे	सा	सा	–	–	–	–	–
क	र	स	क	ता	क्या	ऽ	अ	के	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
सां	–	सां	–	सां	सां	–	मं	रें	सां	नी	–	–	–	–	–
ल	ऽ	खों	ऽ	में	का	ऽ	म	क	र	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
म	नी	नी	–	नी	नी	–	रें	सां	नी	सां,	सां	ध	प	म	ग
है	ऽ	सू	ऽ	र	मा	ऽ	अ	के	ऽ	ला,	अ	के	ऽ	ला	ऽ
×				2				×				2			

– : अन्तरा :–

ध	नी	सां	–	सां	रें	मं	गं	रें	सां	सां	–	–	–	प	ध
आ	ऽ	का	ऽ	श	में	ऽ	क	रो	ऽ	ड़ों	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ
×				2				×				2			
नी	–	–	–	नी	नी	–	रें	सांरें	नीसां	ध	–	–	–,	नी	सां
रे	ऽ	ऽ	ऽ	हैं	टिम	ऽ	टि	माऽ	ऽऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ,	आ	ऽ
मं	–	रें	–	नी	प	ध	नी	सां	रेंसां	नी	सांनी	ध	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			

"आकाश में करोड़ों" दुबारा गाएं

सा	सा	म	म	म	ध	ध	ध	ग	ग	रे	–	–	–	–	–
अं	ध	का	ऽ	र	ज	ग	का	ह	र	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
नी	नी	रे	रे	रे	प	–	म	रे	सा	सा,	सां	ध	प	म	ग
है	ऽ	चँ	ऽ	द्र	मा	ऽ	अ	के	ऽ	ला,	अ	के	ऽ	ला	ऽ
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं

"जो बोले सो अभय"

जो बोले सो अभय, जो बोले सो अभय।
वैदिक धर्म की जय, वैदिक धर्म की जय ।।

जो वेद की शिक्षा में मनुज मन लगाऐंगे,
धर्मार्थ काम मोक्ष वो फल चार पाऐंगे ।

जीवन हो शान्ति मय, जीवन हो शान्ति मय,
वैदिक धर्म की जय, वैदिक धर्म की जय ।।

तज कर सभी कुपन्थ, शरण वेद की गहो,
त्रय ताप से हो रहित, सत्य शान्ति सुखलहो ।

पाया है शुभ समय, पाया है शुभ समय,
वैदिक धर्म की जय, वैदिक धर्म की जय ।।

हे आर्य बन्धु त्याग, सकल वासना विषय,
सायं व प्रातः ईश से करिए यही विनय ।

असतो मा सद् गमय, असतो मा सद् गमय,
वैदिक धर्म की जय, वैदिक धर्म की जय ।।

अभिमान द्वेष मन में, किसी से कभी न हो,
जब जब मिलो "प्रकाश" बड़े प्रेम से कहो ।।

नमस्ते महाशय, नमस्ते महाशय,
वैदिक धर्म की जय, वैदिक धर्म की जय ।।

*****

ताल–कहरवा

–: स्थाई :–

									–	ग	सा
									ऽ	जो	ऽ
						×			2		
सा	म	म	म	ग	म	प	प	–	–,	प	ध
बो	ऽ	ले	सो	ऽ	अ	भ	य	ऽ	ऽ,	जो	ऽ
×			2			×			2		
नी	नी	सां	नी	ध	ध	प	प	–	–,	सां	सां
बो	ऽ	ले	सो	ऽ	अ	भ	य	ऽ	ऽ,	वै	ऽ
×			2			×			2		
सां	सां	सां	सां	सां	रें	नी	नी	–	–,	नी	नी
दि	क	ध	र	म	की	ज	य	ऽ	ऽ,	वै	ऽ
×			2			×			2		
नी	नी	नी	नी	नी	सां	ध	ध,	प	प	म	ग
दि	क	ध	र	म	की	ज	य,	बो	लो	वै	ऽ
×			2			×			2		
म	म	ध	प	प	म॑	प	प	–	–	ग	ग
दि	क़	ध	र	म	की	ज	य	ऽ	ऽ	वै	ऽ
×			2			×			2		
म	म	ध	प	प	म॑	प	प	–	–,	गं	गं
दि	क	ध	र	म	की	ज	य	ऽ	ऽ,	बै	ऽ
×			2			×			2		
गं	गं	गं	रें	मं	गं	सां	सां	–	–	सां	सां
दि	क	ध	र	म	की	ज	य	ऽ	ऽ	वै	ऽ
×			2			×			2		
सां	सां	सां	नी	रें	सां	नी	ध,	प	म	ग	ग
दि	क	ध	र	म	की	ज	य,	बो	लो	वै	ऽ
×			2			×			2		

म	म	ध	प	प	म॑	प	प	–	–,
दि	क	ध	र	म	की	ज	य	ऽ	ऽ,
×			2			×			2

: अन्तरा :-

										सा	–
										जो	ऽ
						×			2		
सा	म	म	म	ग	म	प	–	प	प	प	ध
वे	ऽ	द	की	शि	ऽ	क्षा	–	में	म	नु	ज
×			2			×			2		
नी	नी	सां	ध	–	म॑	ध	प	–	–,	प	प
म	न	ल	गा	ऽ	ऐं	गे	ऽ	ऽ	ऽ,	ध	र
×			2			×			2		
ध	–	सां	रें	–	मं	गं	–	गं	गं	गं	गं
मा	ऽ	र्थ	का	ऽ	म	मो	ऽ	क्ष	वो	फ	ल
×			2			×			2		
रें	गं	रें	सां	ध	नी	सां	–	–	–,	सां	सां
चा	ऽ	र	पा	ऽ	ऐं	गे	ऽ	ऽ	ऽ,	फ	ल
×			2			×			2		
ध	–	म	प	–	म	ग	–	–	–,	सा	–
चा	ऽ	र	पा	ऽ	ऐं	गे	ऽ	ऽ	ऽ,	जी	ऽ
×			2			×			2		

'जीवन हो शान्तिमय' यह पंक्ति स्थाई की भाँति मानी है-
शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने है-

"रहेंगे ना हम ना ये सुख"

रहेंगे न हम न ये सुख साज सारे,
मगर सृष्टि का चक्र चलता रहेगा ।
उदय पूर्व में प्रातः जो सूर्य होगा,
वही साँझ पश्चिम में ढलता रहेगा।।

भले कोई प्रिय के मिलन की खुशी में,
करे जागरण प्रीत के गीत गाए।
मगर ज्योति से जगमगाने सदन को,
सकल रैन लघु दीप जलता रहेगा।।

सहस्त्रों हुए छेद हैं टूक लाखों,
हुआ तन सकल सूख पतझड़ सरीखा।
मगर मित्र मेरा ये मानस का मधुबन,
सदा फूलता और फलता रहेगा।।

सकल बुध जनों का वचन ये मनुज का,
पतन और उत्थान मन पर है निर्भर ।
बिगाड़े उसे जो बिगड़ता रहेगा,
संभाले उसे वह संभलता रहेगा।।

भले काम में खोल कर धन लुटाओ,
करो दाब धरती में दुर्गति न धन की।
सरोवर का पानी नहीं वो सड़ेगा,
कि जो नित निरन्तर निकलता रहेगा।।

न पूछो है आकाश धरती का अन्तर,
भ्रमर वृन्द में औ पतंगो के दल में।
वो फूलों का रस ले कहीं जा बसेगा,
ये दीपक में निर्द्वन्द्व, जलता रहेगा।।

अगर उच्च पद चाहता है जगत में,
मिटादे "प्रकाशार्य" अस्तित्व अपना।
कि जो बीज मिट्टी में मिल जाएगा बस,
वही फूलता और फलता रहेगा।।

*****

ताल-कहरवा

-: स्थाई :-

											सा	ध	सा	ग	ग
											र	हैं	ऽ	गे	ना
ग	ग	ग	सां	सांध	सांध	प	ग	म	मं	म	म	रेम	रे	सा	नी
ह	म	ना	ये	सुऽ	खऽ	सा	ज	सा	ऽ	रे	म	गऽ	ऽ	सृ	ष्टि
×				2				×				2			
नी	नी	नी	नी	नी	नी	सा	म	म	ग	ग	सां	सां	सां	सां	नी
का	ऽ	च	क्र	च	ल	ता	र	हे	ऽ	गा,	उ	द	य	पू	र्व
×				2				×				2			
सां	–	सां	सां	नी	रें	नी	ध	ध	–	ध	ध	ध	नी	ध	म
मे	ऽ	प्रा	त	जो	ऽ	सू	र्य	हो	ऽ	गा,	व	ही	ऽ	साँ	झ
×				2				×				2			
रे	-सा	सा	नी	नी	नी	सा	म	म	ग	ग,	सा	ध	सा	ग	ग
प	ऽश	चिम	में	ढ	ल	ता	र	हे	ऽ	गा,	र	हें	ऽ	गे	ना
×				2				×				2			

-: अन्तरा :-

											ध	ध	ध	ध	ध
											भ	ले	ऽ	को	ई
ध	ध	ध	ध	ध	ध	सां	नी	सां	–	सां	सां	नी	रें	नी	ध
प्रि	य	के	मि	ल	न	की	खु	शी	ऽ	में	क	रे	ऽ	जां	ग
×				2				×				2			
ध	नी	ध	म	प	–	म	ग	ग	–	ग	–,	सां	सां	ध	ध
र	ण	प्री	ति	के	ऽ	गी	त	गा	ऽ	ए	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
म	म	रेम	सारे	नी	नी	सा	म	ग	–	–,	ध	ध	ध	ध	ध
ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	भ	ले	ऽ	को	ई
×				2				×				2			

ध	ध	ध	ध॒	ध	ध	सां	नी	सां	–	सां	सां	नी	रें	नी	ध
प्रि	य	के	मि	ल	न	की	खु	शी	ऽ	में,	क	रे	ऽ	जा	ग
×				2				×				2			
ध॒	नी	ध॒	म	प	–	म	ग	ग	–	ग,	सा	ध़	सा	ग	ग॒
र	ण	प्री	ति	के	ऽ	गी	त	गा	ऽ	ए,	म	ग	र	ज्यो	ति
×				2				×				2			
ग	ग	ग	सां	सांध	सांध	प	ग	म	म	म,	म	रेंम	रे	सा	नी़
से	ऽ	जग	म	गाऽ	ऽऽ	ने	स	द	न	को,	स	कल	ऽ	रै	न
×				2				×				2			
नी़	नी़	नी़	नी़	नी़	नी़	सा	म	म	ग	ग,	सां	सां	सां	सां	नी
ल	घु	दी	प	ज	ल	ता	र	हे	ऽ	गा,	उ	द	य	पू	र्व
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाने हैं –

"विनय, मेरी बहनों सुनो"

विनय मेरी बहनों! सुनो धर ध्यान ।
दशा सुधारो अपनी, छोड़ो अब आलस अज्ञान ।।

हुई तुम्हीं में कैसी नारी, दमयन्ती रानी सुकुमारी
सावित्री देवी, गन्धारी, सती, पद्मिनी, जनक दुलारी
सहे अनेकों संकट भारी, किन्तु न निज मर्याद बिसारी
लोपामुद्रा, गार्गी-सी थीं विदुषी चतुर महान ।।

अब विद्या तुमने बिसराई, मूरखता से लगन लगाई
जो लक्ष्मी थी कभी कहाई, वह शुद्रा की पदवी पाई
जिन दुर्गा की शक्ति दिखाई, वह अबला बन शान घटाई
क्यां से क्या हो गई हाय! तुम दुनियाँ के दरम्यान ।।

ईश्वर पर विश्वास न लातीं, इधर-उधर को मन भटकातीं
अपना धर्म-कर्म बिसरातीं, पीर-फकीरों पर हैं जातीं
बच्चों के मुँह में थुकवाती हा-हा! कैसा पाप कमातीं
कबर, ताजिया, सेड शीतला पूजत मियाँ मसान।।

छोटेपन में करके शादी, बच्चों की करती बरबादी
बेहूदी बातें बतला दी, भूतों प्रेतों की शिक्षा दी
कायर निज सन्तान बना दी, वे क्या पालेंगे आजादी
कट सकते हों नही जिन्होंसे चूहे के भी कान।।

उत्तम विद्या पढ़ो पढ़ाओं, सत्यशीलता को अपनाओ
गृह कार्यों में ध्यान लगाओं, समय अमोल न व्यर्थ गँवाओ
विदुषी, वीराङ्गना कहाओ, दुर्गा की-सी शक्ति दिखाओ
चाहो सुख सम्मान, सीख यह लो "प्रकाश" की मान
विनय मेरी बहिनो! सुनो धर ध्यान।।

*****

ताल – कहरवा

–: स्थाई :–

														ध	प
														वि	ऽ
								×				2			
प	ध	ध	सां	सां	–	सां	–	–	–,	नी	रें	सां	नी	ध	प
न	ऽ	य	ऽ	में	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ,	ब	ह	ऽ	नों	ऽ	सु
×				2				×				2			
ग	–	म	ध	ध	ध	प	प	प	–	–	–	प	–	–	–
नों	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	र	ऽ	ध्या	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				×				2			
सां	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	रें	रें	गं	गं	सां	–	सां	–
द	शा	ऽ	सु	धा	ऽ	रो	ऽ	अ	प	नी	ऽ	छो	ऽ	ड़ो	ऽ
×				2				×				2			
रें	मं	मं	गं	गं	रें,	रें	सां	सां	नी	रें	सां	नी	ध,	ध	प
अ	ब	आ	ऽ	ल	स,	अ	ऽ	ज्ञा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ,	वि	ऽ
×				2				×				2			

–: अन्तरा :–

म	म	म	म	म	म	ग	म	म	प	प	–	प	–	प	ध
हु	ई	ऽ	तु	म्हीं	ऽ	में	ऽ	कै	ऽ	सी	ऽ	ना	ऽ	री	ऽ
×				2				×				2			
ध	सां	सां	नी	नी	ध	ध	नी	ध	प	प	प	प	–	प	–
द	म	यं	ऽ	ती	ऽ	ना	ऽ	री	ऽ	सु	कु	मा	ऽ	री	ऽ
×				2				×				2			

"सावित्री देवी" अगली पंक्ति इसी प्रकार गानी है –

प	ध	सां	रें	गं	–	गं	–	रें	मं	गं	रे	सां	–	सां	–
स	हे	ऽ	अ	ने	ऽ	कों	ऽ	सं	ऽ	क	ट	भा	ऽ	री	ऽ
×				2				×				2			

नी	रें	सां	नी	ध	ध	ध	ध	नी	रें	सां	नी	ध	प	प	प
कि	ऽ	न्तु	न	नि	ज	म	र	या	ऽ	द	बि	सा	ऽ	री	ऽ
×				2				×				2			
सां	–	सां	–	सां	–	सां	रें	नी	–	नी	सां	नीं	ध	प	–
लो	ऽ	पा	ऽ	मु	ऽ	द्रा	ऽ	गा	ऽ	र	गी	सी	ऽ	थी	ऽ
×				2				×				2			
ध	नी	नी	सां	ध	ध	प	र्म	प	–	–	–	प	–,	ध	प
वि	दु	षी	ऽ	च	तु	र	म	हा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ,	वि	ऽ
×				2				×				2			

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं –

"यज्ञ जीवन का हमारे "

यज्ञ जीवन का हमारे श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है ।
यज्ञ का करना-कराना आर्यों का धर्म है ।।

यज्ञ से दिशि हो सुगन्धित शान्त हो वातावरण ।
यज्ञ से सदज्ञान हो, हो यज्ञ से शुद्धाचरण ।।

यज्ञ से हो स्वस्थ काया, व्याधियाँ सब नष्ट हों ।
यज्ञ से सुख सम्पदा हो, दूर सारे कष्ट हों ।।

यज्ञ से दुष्काल मिटते, यज्ञ से जल वृष्टि हो ।
यज्ञ से धन धान्य हो, बहुभाँति सुखमय सृष्टि हो ।।

यज्ञ है प्रिय मोक्षदाता, यज्ञ शक्ति अनूप है।
यज्ञ-मय यह विश्व है, विश्वेश यज्ञ स्वरुप है ।।

यज्ञमय अखिलेश! ऐसी आप अनुकम्पा करें ।
यज्ञ के प्रति आर्य जनता में अमित श्रद्धा भरें ।।

यज्ञ पुण्य "प्रकाश" से सब पाप, ताप तिमिर हरें ।।
यज्ञ नौका से अगम संसार-सागर को तरें ।।

*****

ताल - तीव्रा

–: स्थाई :–

सां	सां	सां	सां	–	सां	रे	नी	नी	सां	नी	धप	ग	रे
य	ऽ	ज्ञ	जी	ऽ	व	न	का	ऽ	ह	मा	ऽऽ	रे	ऽ
×			2		3		×			2		3	
सा	ग	ग	ग	म	सां	ध	प	–	म	प	–	–	–
श्रे	ऽ	ष्ठ	सुँ	ऽ	द	र	क	ऽ	र्म	है	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	
गं	गं	गं	गं	–	रें	सां	रे	रें	गुरें	नी	ध	प	प
य	ऽ	ज्ञ	का	ऽ	क	र	ना	ऽ	कऽ	रा	ऽ	ना	ऽ
×			2		3		×			2		3	
प	नी	नी	नी	सां	गं	गं	रें	–	सां	सां	प	ध	प
आ	ऽ	ऽ	यों	ऽ	का	ऽ	ध	ऽ	र्म	है	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	

–:अन्तरा :–

म	–	म	म	म	ग	म	प	प	प	प	प	प	ध
य	ऽ	ज्ञ	से	ऽ	हो	ऽ	दि	शि	सु	गं	ऽ	धि	त
×			2		3		×			2		3	
नी	नी	सां	नी	ध	प	म	प	प	म	प	प	–	–
शां	ऽ	त	हो	ऽ	वा	ऽ	ता	ऽ	व	र	ण	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	
प	ध	सां	गं	गं	गं	गं	रें	गं	रें	सां	नी	नी	प
य	ऽ	ज्ञ	से	ऽ	स	द्	ज्ञा	ऽ	न	हो	ऽ	हो	ऽ
×			2		3		×			2		3	
प	नी	नी	नी	सां	गं	गं	रें	सां	सां	सां	सां	सां	सां
य	ऽ	ज्ञ	से	ऽ	शु	ऽ	द्धा	ऽ	च	र	ण	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	

स्थाई की प्रथम पंक्ति गाएं – शेष अन्तरे इसी प्रकार गाएं –

"लहराए जग में झण्डा"

लहराये-लहराये जग में झण्डा प्यारा ओम् का ॥

हाट दुकानों धर्म-स्थानों द्वारों पर दीवारों पर ।
खेत मचानों मैदानों पर, मन्दिर और मीनारों पर ॥
रथ रमणीक विमानों पर, जलयानों सिन्धु किनारों पर ।
विशद वितानों पर खानों पर, न्यायालय भण्डारों पर ॥
लहराये-लहराये जग में झण्डा प्यारा ओम् का ।

अहो; ओम् का झण्डा हमको प्राणों से भी प्यारा है ।
आँखों का ये तारा है मन-मन्दिर का उजियारा है ॥
कितने सुभट आर्य वीरों ने सब कुछ इस पर वारा है ।
तलवारों की छाया में भी ओम् नाम उच्चारा है ।
लहराये-लहराये जग में झण्डा प्यारा ओम् का ॥

जिसने वैदिक धर्म-कर्म के परम मर्म को है जाना ।
पीने और पिलाने को प्रिय ओम् नाम रस को छाना ॥
जिसने आर्य जाति की सेवा करने का दृढ़ व्रत ठाना ।
सच पूछो तो उसी आर्य का सफल हुआ यह पद गाना ॥
लहराये-लहराये जग में झण्डा प्यारा ओम् का ॥

ओम् नाम और वेद धर्म को जो कोई अपनाता है ।
होकर दूर पाप-तापों से अटल शाँति-सुख पाता है ॥
हो निशङ्क बलवीर धीर वह भय न काल से खाता है ।
वह "प्रकाश" अति प्रेम-मगन हो सुन्दर पद यह गाता है ।
लहराये-लहराये जग में झण्डा प्यारा ओम् का ॥

*****

–: स्थाई :–

सां सां सां सां	सां सां सां रें	नी – नी सां	नी ध प –
ल ह रा ऽ	ए ऽ ल ह	रा ऽ ए ऽ	ज ग में ऽ
×	2	×	2
ग प प –	ध नी नी –	ध – – नी	प – – –
झं ऽ न्डा ऽ	प्या ऽ रा ऽ	ओ ऽ ऽ म	का ऽ ऽ ऽ
×	2	×	2
म – म –	म प ग म	प – – प	प – प ध
झं ऽ न्डा ऽ	प्या ऽ रा ऽ	ओ ऽ ऽ म	का ऽ अ जी
×	2	×	2
ध नी नी नी	नी ध ध नी	प – – प	प – प ध
झं ऽ डा ऽ	प्या ऽ रा ऽ	ओ ऽ ऽ म	का ऽ ऽ ऽ
×	2	×	2

–: अन्तरा :–

म म म म	म प ग म	म प प प	प प प ध
हा ऽ ट दु	का ऽ नों ऽ	ध र्म स् ऽ	था ऽ नों ऽ
×	2	×	2
ध नी नी नी	नी ध ध नी	ध प प –	प प – –
द्वा ऽ रो ऽ	प र दी ऽ	वा ऽ रों ऽ	प र ऽ ऽ
×	2	×	2

अगली पंक्ति इसी प्रकार गानी है –

रें मं गं रें	सां – सां सां	नी रें सां नी	ध ध, ध ध
र थ र म	णी ऽ क वि	मा ऽ नों ऽ	प र, ज ल
×	2	×	2
नी रें सां नी	ध प प ध	ग ग म ध	प प – –
या ऽ नों ऽ	सि ऽ न्धु कि	ना ऽ रों ऽ	प र ऽ ऽ
×	2	×	2

अगली पंक्ति इसी प्रकार से गानी हैं–

शेष अन्तरे इसी प्रकार से गाने हैं –

पुस्तक प्राप्ति

1. **श्री राजीव शर्मा**
   322, गुरू जम्बेश्वर नगर ए
   चौ. चरणसिंह मार्ग
   क्वीन्स रोड
   जयपुर (राज.)
   फोन : (0141) 2354296

2. **श्रीमती सरोज वर्मा**
   तुलसी की ग्वाड़ी
   नमक की मण्डी
   किशन पोल बाजार
   जयपुर (राज.)
   फोन : (0141) 2312508

3. **श्री इन्द्र देव आर्य**
   रोड 17, 243 अशोक नगर
   उदयपुर (राज.)
   फोन : (0294) 2417442

4. **मधुर प्रकाशन**
   2804, गली आर्यसमाज
   बाजार सीताराम
   दिल्ली-110006
   फोन : (011) 23238631

5. **श्री गुलाब सिंह जी राघव**
   एफ. 271-सी दिलशाद गार्डन
   दिल्ली-95
   फोन : (011) 22573069

6. **श्री विजय कुमार गोविन्द राम हासानन्द**
   4408, नई सड़क
   दिल्ली
   फोन : (011) 23977216

7. **श्री प्रमोद आर्य, कोषाध्यक्ष**
   आर्य समाज, भोजूबीर
   वाराणसी
   फोन : (0542) 2383023

8. **पं0 अखिलेश कुमार लखनवी**
   15 बी, अरगड़ा
   हुसैन गंज बाटा कम्पनी के पीछे
   लखनऊ (उ. प्र.)
   फोन : (0522) 2456783

9. **श्री मंत्री जी, आर्य समाज**
   19 विधान सरणी
   आर्य समाज
   कलकत्ता
   फोन : (033) 22413439